गुमला जिले की बेहतरी की कहानियां

चट्टानों से पार जाती हौसलों की उड़ान

पहल परियोजना

समग्र कृषि व्यवस्था एवं आजीविका के लिए सहभागी पहल

विकास संवाद

HDFC BANK
PARIVARTAN
A step towards progress

शीर्षक	:	चट्टानों से पार जाती हौसलों की उड़ान (गुमला जिले की बेहतरी की कहानियां)
मार्गदर्शन	:	सचिन कुमार जैन, राकेश मालवीय
संपादन	:	संदीप नाइक, रंजीत अभिज्ञान, राजेश भदौरिया
सहयोग	:	अजयलाल विश्वकर्मा, अंशुमाला डुंगडुंग, एलीना तिग्गा, गौरव कुमार सिंह, शरद नायक, अमरदीप कच्छप, अमित कुजूर, द्रौपदी कुमारी सिंह, मेनका सिंह, प्रीति केरकेट्टा, संदीप केरकेट्टा, सुरेन्द्र नागेसिया, ऊषा लकरा, वर्षा रानी बखला
साज-सज्जा	:	यशवंत कुशवाहा
मुद्रक	:	अमित प्रकाशन
प्रतियां	:	500
वर्ष	:	2024
प्रकाशन सहयोग	:	एचडीएफसी बैंक परिवर्तन
प्रकाशक	:	विकास संवाद, ए-5, आयकर कॉलोनी, जी-3, गुलमोहर कॉलोनी भोपाल (मध्य प्रदेश) 462039
संपर्क	:	0755- 4252789 E-mail : office@vssmp.org
वेबसाइट	:	www.vssmp.org

आमुख

झारखंड देश का एक आदिवासी बहुल राज्य है जो प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है। इस राज्य में लगभग 32 आदिवासी समुदाय रहते हैं, जिनमें संथाल प्रमुख हैं। संथालों के अलावा असुर, बंजारा, बाथुडी, बेदिया, भूमिज, बिरहोर, उरांव, मुंडा से लेकर अनेक समुदाय हैं जो प्रकृति की गोद में रहकर अपना जीवन जीते हैं। झारखंड राज्य बिहार से अलग होकर 15 नवम्बर 2000 को स्वतंत्र राज्य के रूप में अस्तित्व में आया था। आज झारखंड विकास की अनेक चुनौतियों से टकराते हुए तेजी से विकास पथ पर अग्रसर है। 24 जिलों में फैला और पहाड़ी चट्टानों और हरे-भरे जंगलों से घिरा यह प्रदेश अपनी जीवन संस्कृति में अनूठा है।

राज्य की राजधानी रांची से 90 किलोमीटर दूर गुमला जिला है। प्रकृति की सुंदरता से धन्य गुमला घने जंगलों, पहाड़ियों और नदियों से घिरा है। यह झारखंड राज्य के दक्षिण-पश्चिम भाग में स्थित है। 18 मई 1983 को गुमला जिला रांची से अलग होकर पूर्ण जिला बना था। पहले यह पुराने रांची जिले का ही हिस्सा था। मुंडारी भाषा में शब्द 'गुमला' लोकप्रिय माना जाता है, जो चावल प्रसंस्करण कार्य (धान-कूटना) से जुड़ा है। एक दूसरी कथा 'गौ-मेला' से संबंधित है। हर मंगलवार गुमला में आयोजित होने वाला यह मेला साप्ताहिक है। ग्रामीण क्षेत्रों में नागपुरी और सादरी भाषा में लोग अब भी इसे 'गोमीला' कहते हैं। गुमला जिले में 3 अनुमंडल, 12 प्रखंड, 159 ग्राम पंचायतें और 952 गांव हैं। गुमला जिला 5327 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है और इसकी आबादी सन 2011 की जनगणना अनुसार 1025213 थी, जिनमें पुरुषों की संख्या 514390 और महिलाओं की संख्या 510823 थी।

विकास संवाद पिछले बीस वर्षों से समाज विकास के कार्यों, जैसे पोषण, महिला सशक्तिकरण, जल संरक्षण, आजीविका, उन्नत खेती, मीडिया के साथ संवाद, शिक्षा, स्वास्थ्य और आदिवासी इलाकों की समस्याओं पर देश के चार राज्यों में जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन से लेकर नीतिगत हस्तक्षेप करने में लगा है। विकास संवाद का पूरा काम समाज के हाशिए पर खड़े दलित, वंचित और आदिवासी समाज के बच्चों, किशोरों, युवाओं, महिलाओं और किसानों के साथ है। विकास संवाद का मानना है कि समुदायों को सशक्त करके विकास योजनाओं की बागडोर उनके हाथों में सौंपे बिना विकास का काम अधूरा है।

वर्ष 2021 से विकास संवाद गुमला जिले में एचडीएफसी बैंक के सहयोग से जिले के पालकोट एवं रायडीह प्रखंड के कुल 26 गांवों में एक समन्वित 'पहल परियोजना' का क्रियान्वयन कर रहा है। इनमें पालकोट के 8 गांव और रायडीह के 18 गांव शामिल हैं। इस परियोजना के तहत स्थानीय समुदायों और प्रशासन के बीच समन्वय स्थापित कर आर्थिक-सामजिक बदलाव की पहल की जा रही है। परियोजना का मुख्य जोर उन्नत एवं जैविक खेती, जल संरक्षण, पोषण और स्वास्थ्य पर है। इस परियोजना से लगभग पच्चीस हजार की आबादी को प्रत्यक्ष रूप से लाभ मिल रहा है और 4500 परिवारों से विभिन्न कार्ययोजनाओं के द्वारा सीधा संबंध स्थापित किया गया है।

झारखंड राज्य के पोषण बोर्ड के अध्यक्ष हिमांशु चौधरी कहते हैं, 'झारखंड में कुपोषण से लड़ाई एक बड़ी चुनौती है और राज्य शासन अपने स्तर पर इससे लड़ रहा है, लेकिन जिस तरह से विकास संवाद ने समन्वित तरीके से इस मुद्दे पर छोटी सी अवधि में काम करके सकारात्मक परिणाम दिखाए हैं, वे पूरे राज्य के लिए एक रोल मॉडल है। हम कोशिश करेंगे कि इस मॉडल को राज्य भर में फैलाया जाए और सीख को अपनाया जाए'।

विकास संवाद के निदेशक सचिन जैन कहते हैं, 'जिस तरह की परिस्थिति में हमने बहुत छोटी टीम के साथ कार्य आरम्भ किया था, वह चुनौती भरा था, क्योंकि टीम के लिए सक्षम लोगों को खोजना, उन्हें विभिन्न मुद्दों पर प्रशिक्षित करना और फिर फील्ड के लिए तैयार करना मुश्किल भरा काम था। गुमला जैसे जिले में कोई काम करने के लिए तैयार भी नहीं हो पा रहा था क्योंकि गांव दूर-दराज में फैले हुए थे, यहाँ तक कि गांव जंगलों, चट्टानों और पहाड़ों से घिरे हुए थे। इसलिए हमने स्थानीय स्तर पर ही आदिवासी युवाओं को तैयार किया और उन्हें सघन प्रशिक्षण दिया। आज हम इस बात को गर्व से कह सकते हैं कि इन युवाओं ने बहुत कम समय में परियोजना के मूल को समझकर जो काम 26 गांवों में किया है, वह बेहद सराहनीय है। हालांकि मंजिल अभी बहुत दूर है, पर हम सीखते हुए बेहतर काम करने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। हम इसके लिए एचडीएफसी बैंक और प्रशासन के आभारी हैं।'

परियोजना समन्वयक राजेश भदौरिया कहते हैं, 'झारखंड में काम करना खासकर एकदम नए इलाके में शुरुवात में बहुत मुश्किल था क्योंकि ना तो क्षेत्र से परिचय था और ना ही वहां की जीवन संस्कृति से। वहाँ के आदिवासी मध्यप्रदेश के आदिवासियों से भिन्न थे और उनकी भाषा-बोली और गांव को समझने में हमें समय लगा, मगर हमें स्थानीय स्तर पर युवा कार्यकर्ताओं की अच्छी टीम मिली जिन्हें हमने प्रशिक्षित कर अपनी परियोजना के उद्देश्य और क्रियान्वयन के तरीके बताए। उन्होंने बहुत जल्दी चीजों को समझा और मात्र दो साल की अवधि में अच्छे परिणाम आए।'

इस किताब के बारे में

इस संकलन में हमने बहुत प्रारंभिक स्तर के बदलावों को दर्शाने वाली कुछ कहानियों का दस्तावेजीकरण किया है। हम यह दावा नहीं करते कि परियोजना के दायरे में आने वाले गांवो में कुपोषण खत्म हुआ है, आजीविका के अवसर बहुत बढ़ गए हैं, पलायन रुक गया है, शासकीय सेवाएं, जैसे टीकाकरण, आंगनवाड़ी या मनरेगा की व्यवस्था में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया है या खेती के पैटर्न बदल गए हैं और पैदावार दोगुनी हो गई है, परंतु यह जरूर कहेंगे कि हमारी टीम के प्रयासों से सैकड़ों बच्चे गंभीर कुपोषण से बाहर निकल आये हैं, जागरूकता आने से टीकाकरण में वृद्धि आई है, खेती में रासायनिक खाद और खतरनाक कीटनाशकों का प्रयोग कम हुआ है, लोगों ने फसलों के पैटर्न में कहीं-कहीं आंशिक परिवर्तन किया है और पन्द्रह से पच्चीस प्रतिशत ज्यादा फसलें होने लगी हैं। गोबर खाद, घनजीवामृत और खुद के द्वारा बनाये गए कीटनाशकों का प्रयोग बढ़ा है। एकल और विधवा महिलाओं और निराश्रित बुजुर्गों ने अपनी बाड़ियों में सब्जियां उगाकर और नजदीक के हाट-बाजारों में बेचकर हर सप्ताह एक हजार रुपए से लेकर तीन हजार रुपए तक की आमदनी हासिल करना शुरू किया है। इसे संतोषजनक कहा जा सकता है। लोगों ने अपने घरों में दोनों समय सब्जियों का उपभोग करना शुरू किया है और इससे स्वास्थ्य बेहतर दिखने लगा है। बहुत से युवाओं ने पलायन न कर गांव में ही अपनी छोटी सी ज़मीनों पर सब्जी उगाकर काम करना शुरू किया है। हम यह नहीं कह रहे हैं कि बहुत कुछ बदला है, पर बहुत कुछ बदलने की प्रक्रिया में है और लोगों ने अपनी अस्मिता को पहचानकर, अपनी सामूहिकता को जानकर बदलाव की जो प्रक्रिया आरम्भ की है, वह जरूर ही महत्वपूर्ण है।

ये छोटी-छोटी कहानियाँ लोगों के संघर्ष, उनके जीवन के दुख-दर्द और परिस्थितियों को दर्शाती हैं और सबसे बड़ी बात यह कि कैसे लोगों ने खुद थोड़े से प्रोत्साहन और प्रशिक्षण से अपने जीवन में बदलाव किया और अब वे लगातार ऐसी पहल कर रहे हैं ताकि जीवन में उजियारा फैले। ये कहानियां उन प्रक्रियाओं को भी समझने का एक प्रयास है कि जब किसी नई जगह पर टीम एकदम नई हो तो कैसे समुदाय के साथ काम करने, सबको जोड़ने और लिखने-पढ़ने तथा सीखने का माहौल बनता है।

नए क्षेत्र में काम करने और जमने में समय लगता है और बदलाव एक लम्बी प्रक्रिया है। जिस समाज में सदियों से भेदभाव, शोषण और असमानता यथास्थिति बनी हुई थी, वहां ये संघर्षशील लोग सच में बदलाव के नायक और नायिकाएं हैं जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी बदलाव के वाहक बने हुए हैं। हम इन सब मूक नेतृत्वकर्ताओं को सलाम करते हैं और उम्मीद करते हैं कि जल्द ही चीजें और बदलेंगी। विकास संवाद टीम इनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ने के लिए प्रतिबद्ध है।

• संपादक मंडल की ओर से

पहल की रूपरेखा

समग्र कृषि व्यवस्था और आजीविका के लिए सहभागी पहल

लक्ष्यः कृषि और इसके आयामों द्वारा वंचित समुदायों के छोटे-मझोले और महिला किसानों की क्षमता वृद्धि से उनकी आय में वृद्धि के साथ पोषण और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होना।

दृष्टिः परियोजना के अंतर्गत समेकित कृषि और वैकल्पिक आजीविका के देशज ज्ञान का संरक्षण, प्रयोग, प्रसारण एवं खाद्यान्न व खाद्य पदार्थों के उत्पादन और उपभोग को सुनिश्चित करना। इस 'पहल' द्वारा कृषि और इससे संबंधित आयामों में कम लागत वाली देशज और स्थानीय तकनीकों को बढ़ावा देना।

अध्ययन, सूचना सामग्री और सूचना प्रबंधन	स्थानीय कृषि और उससे संबंधित परिस्थितियों का अध्ययन	परियोजना के निवेश से आने वाले बदलावों की सतत तथ्यात्मक निगरानी	परियोजना के प्रभावों का तथ्यात्मक अध्ययन	कृषि से संबंधित सूचना सामग्री का निर्माण (मॉड्यूल, मैन्युअल और प्रारूपों का निर्माण)
सामुदायिक सशक्तिकरण	ग्राम विकास समिति का गठन और सशक्तिकरण	कृषकों के हित-समूह का गठन और प्रबंधन	महिला किसानों के साथ कृषि व्यवस्था संबंधित जमीनी पहल	खाद्य एवं पोषण व्यवहार में आवश्यक बदलाव
कृषि के टिकाऊ विकास के लिए पहल	रासायनिक कीटनाशकों और उर्वरकों के उपयोग को सीमित करना, प्राकृतिक सामग्रियों द्वारा मिट्टी और कीट प्रबंधन	किसान पाठशाला का संचालन, सन्दर्भ सामग्री, बीज बैंक की स्थापना और प्रबंधन, खेती के प्राकृतिक पहलुओं को बढ़ाना आदि	पोषण व्यवहार में परिवर्तन, फसल विविधता, पोषण वाटिका, मुर्गीपालन, बकरी पालन, पौष्टिक अनाज उत्पादन आदि	सौर ऊर्जा का उपयोग, प्राकृतिक कृषि आदानों का स्थानीय उत्पादन और सिंचाई हेतु जल संरचनाओं का विकास आदि
कृषि की योजना एवं प्रबंधन	**मिटटी का प्रबंधन** मिट्टी परीक्षण, मिटटी के कटाव को रोकना, मिटटी की न्यूनतम जुताई, भारी मशीनरी के प्रयोग से बचाव	**सिंचाई का प्रबंधन** टपक सिंचाई, फव्वारा सिंचाई, पद्धति को अपनाना, जल बहाव को नियंत्रित करना, मेड़बंदी, खंती बनाना और पेड़ लगाना	**फसल का प्रबंधन** मिटटी के अनुसार स्थानीय फसल का चयन, देशी बीज का उपयोग, फसल चक्र, मिश्रित खेती अपनाना	**पोषक तत्व प्रबंधन** खेत में जैविक खाद का उपयोग, पोषक तत्वों का उपयोग एवं उचित प्रबंधन, जैविक कीट नाशक एवं जैविक उर्वरकों का उपयोग

पहल की उपलब्धियां

समग्र कृषि व्यवस्था और आजीविका के लिए सहभागी पहल

पहल	पहल में सहभागी						बदलाव (2 वर्षों में)			
	वर्ष 2021-22			वर्ष 2022-23						
	← सहभागी किसान/उत्पादक 2021-22)	← प्रारंभिक आय	← पहल से जुड़कर आय	← सहभागी किसान/उत्पादक (2022-23)	← प्रारंभिक आय	← पहल से जुड़कर आय	← सहभागी किसान / उत्पादक	← प्रारंभिक आय	← पहल से जुड़कर आय	← बदलाव (% में)
पोषण वाटिका	24	1232	2103	82	5145	27225	106	3189	14664	360
फसल प्रदर्शन	22	5586	16059	10	9340	26784	32	7463	21422	187
सब्जी संकुल	4	8250	21662	14	8764	27880	18	8507	24771	191
कृषि आदान	67	5579	20871	261	5659	15511	328	5619	18191	224
बकरी पालन	0	0	0	29	465	4250	29	233	2125	814
मुर्गी पालन	104	350	1137	235	350	600	339	350	869	148
मछली पालन	0	0	0	13	906	3023	13	453	1512	234

पहल कार्यक्रम में शामिल सभी साझेदार किसानों और परिवारों से बातचीत करके और उनकी उपज का आंकलन करके ही उनकी आय की जानकारी हासिल की जा रही है।

पहल की पहल में सहभागी हुए किसानों के साथ काम करते हुए विकास संवाद ने गुमला के पालकोट और रायडीह सरीखे क्षेत्रों में खेती की चुनौतियों के बारे में बहुत कुछ नया सीखा। सबसे महत्वपूर्ण सीख यह रही कि किस तरह आदिवासी और किसान कठिन से कठिन परिस्थितियों में जीवन जीने के रास्ते तलाशते हैं और कितनी शिद्दत के साथ 'श्रम' करके हर दिन की आय को अर्जित करते हैं। विकास संवाद के कार्यक्रम में यह तय किया गया था कि इस पहल में वही कार्यक्रम किये जाने चाहिए, जो किसानों को, महिलाओं और स्थानीय लोगों को उपयोगी और जरूरी लगते हैं। गाँव की कार्ययोजना बनाने की जिम्मेदारी गाँव की ही विकास समिति और किसानों के संगठन ने उठाई। सामान्य तौर पर लोगों ने यह नहीं सोचा कि संस्था खेती का सामान बाँट रही है, बस उसे ले लिया जाए। उन्होंने वास्तव में हर आदान (इनपुट) को खुद अर्जित किया है। कहीं उनका श्रम/उनकी मेहनत इसमें शामिल रही तो कहीं उन्होंने सामग्री का योगदान देकर साझेदारी की। समुदाय, सरकार और संस्था के साझा प्रयासों से कुछ तात्कालिक बदलाव दिखाई देने लगे हैं।

106 परिवारों ने पोषण वाटिका लगाईं या उसे व्यवस्थित किया। जिन कारणों से उपज में कमी आती थी (मसलन मचान का न होना या पानी की व्यवस्था न होना), उन कारणों का समाधान किया गया। पहल के पहले सब्जियों की वाटिका से उनकी औसतन आय लगभग रु. 3189 होती थी, जिसमें कुछ बदलाव आया और अब वह रु. 14664 रुपये हो गई।

32 ऐसे किसान हैं, जो अपने अपने खेतों (आधे एकड़ से लेकर एक एकड़ का क्षेत्र) में विविधता के साथ उत्पादन का प्रदर्शन (डेमोन्स्ट्रेशन) कर रहे हैं। इनकी पहल को न केवल 350 से अधिक किसानों ने देखा-समझा, बल्कि अपनी खेती में अपनाकर वे अपनी आय में बदलाव भी लाए। इन किसानों की आय रु. 7463 से बढ़कर रु. 21422 हो गई।

किसानों के पास खेती की जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े भी हैं यानी उनका आकार छोटा है। उन क्षेत्रों में पानी की व्यवस्था करना या उनकी सुरक्षा के लिए विशेष पहल करना मुश्किल लग रहा था। तब 18 किसानों ने अपने खेतों को आपस में जोड़ लिया। उनके बीच सिंचाई के लिए साझा संसाधन विकसित किए गए और सब्जी संकुल बनाया गया। अब वे वर्ष में 5 से 7 बार सब्जी उगाते हैं। पहले सब्जी से उनकी आय रु. 8505 होती थी, जो साझा पहल से बढ़कर रु. 24771 हो गई।

328 किसानों के पास खेत हैं, लेकिन वन्य प्राणी या पालतू पशु उनकी उनके खेतों में लगी फसल को चर जाते थे। पहल के अंतर्गत उनके खेतों को धातु की जालियों से सुरक्षित बनाया गया। उन्हें अच्छे बीजों की जरूरत थी, उनके लिए अच्छे बीजों की व्यवस्था की गई, केंचुआ खाद बनाने के लिए ढाँचे बनाए गए। इसके साथ ही खेत पाठशाला भी स्थापित की गई, जिसमें लगभग 1000 किसान शामिल हो चुके हैं। जहाँ वे खेत की तैयारी से लेकर देशज और प्राकृतिक खाद बनाना, बीज उपचार, कीट प्रबंधन करना, फसल प्रबंधन आदि सीखते हैं। इन किसानों की खेती से औसत आय रु. 5619 थी। जो छोटे-छोटे प्रयासों के जोड़ से बढ़कर रु. 18191 हो गई।

इसी तरह बकरी पालन, मुर्गी पालन और मछली पालन की व्यवस्था को भी विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है। इस पहल में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका महिला किसानों की रही है। वे न केवल खेती-पोषण वाटिका से उत्पादन को बढ़ाने की हर संभव कोशिश कर रही हैं, बल्कि अब अपनी उपज को बाज़ार तक भी खुद लेकर जा रही हैं। पहल के अंतर्गत यह प्रयास किया जा रहा है कि फसल को उगाने वाली व्यवस्था बाज़ार से भी सीधे जुड़ें ताकि उसे अपनी उपज के वाजिब दाम मिल सकें।

यह महत्वपूर्ण पहलू है कि पहल के अंतर्गत केवल उपज या आय में वृद्धि ही एकमात्र उद्देश्य नहीं है। यह भी एक उद्देश्य है कि महिलाओं, किशोर-किशोरियों और बच्चों के भोजन में विविधता आए और उनके भोजन में सुझाए गए 10 आहार समूहों में से कम से कम पांच आहार समूहों का भोजन शामिल हो। इस सोच के साथ सहभागी सीख और व्यवहार में बदलाव के लिए भी कोशिशें जारी हैं।

पहल की उपलब्धियां

गतिविधि	कुल संख्या	पुरुष	महिला	कुल भूमि	अन्य लाभार्थी
ग्राम विकास समिति	428	226	202	0	362
भूमि सुधार-भूमि समतलीकरण, मेड़ बंधान	73	46	27	66.02	0
कुआँ जीर्णोधार (कुल 41)	294	216	78	91.46	120
तालाब निर्माण/ जीर्णोधार (कुल 9)	83	60	23	93.09	35
बांध निर्माण/ जीर्णोधार (कुल 3)	77	60	17	79.65	0
सिंचाई पंप-सौर ऊर्जा (कुल 2)	59	34	25	20	0
फलदार पौधों का रोपण (कुल 1220)	40	12	28	14.5	0
सोलर लैंप	215	82	133	0	0
किसान खेत पाठशाला (कुल 5)	8	7	1	5.5	218
किसान समूह	391	239	152	0	0
प्रदर्शन इकाई	33	13	20	26.5	0
टिकाऊ कृषि हेतु बीज एवं खाद सहयोग	378	114	264	216.5	0
मुर्गी पालन इकाई	353	69	284	0	0
बकरी पालन इकाई	30	5	25	0	0
मछली पालन इकाई	29	20	9	0	0
पशु स्वास्थ्य जाँच शिविर (कुल 10)	366	208	158	0	0
मूंग उत्पादन	10	10	0	10	0
मिलेट उत्पादन-मडुआ, ज्वार, चेना, बाजरा	130	76	54	221	
सब्जी उत्पादन	24	21	3	19.5	0
बायो-सैंड वाटर फ़िल्टर	17	17	0	0	0
खाद्य प्रसंस्करण प्रशिक्षण	125	10	115	0	0
खाद्य एवं पोषण सुरक्षा पर महिला प्रशिक्षण	133	0	133	0	390
युवा प्रशिक्षण	48	16	32	0	90
पोषण वाटिका	146	7	139	8.2	0
सहभागिता से सीखना और कार्यवाही (पी.एल.ए.)	547	115	432	0	0
कुल	**4037**	**1683**	**2354**	**878.42**	**1215**

अनुक्रम

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ
1	छोटी जोतों से बनी बड़ी साझेदारी की पहल	9
2	सूरज की ऊर्जा से आ रहा है किसानों के जीवन में उजाला	11
3	जिनकी समस्या है, उनके पास समाधान भी हैं	13
4	चट्टानों से पानी निकालने का जज्बा	15
5	पोषण बाड़ी की पहल, कठिन समस्या का हल	17
6	भीकराम की संघर्ष यात्रा	19
7	सौर ऊर्जा से फैलेगा उजियारा	21
8	समाधानों का कुआं	23
9	सुबह जरूर होती है	25
10	मेड़बंदी के मायने	26
11	कालीचाट से पानी निकाल लाए अगहनी और मुंशी	27
12	तरबूज की लालिमा बिखेरती कसीला देवी	29
13	अपनी कहानी गढ़ती सोसन कुजूर	30
14	सुरक्षित पानी से सुरक्षित जीवन	31
15	साथी हाथ बढ़ाना	32
16	साझा पहल से जल संकट का समाधान	33
17	मुर्गीपालन से आत्मनिर्भर बनीं पुष्पा टोप्पो	34
18	किसान खेत पाठशाला बनी जीवनशाला	35
19	खेत प्रबंधन से बदलाव का सफर	36
20	पोषण बाड़ी के विविध प्रयोग	37
21	केंचुआ खाद बना एक वरदान	38
22	जैविक खेती ही है भविष्य का सहारा	39
23	मुर्गीपालन और सेलेस्तिना की दुनिया	40
24	अनन्या की कुपोषण से लड़ाई	41
25	मेहनत के ईंधन से ही जीवन की गाड़ी चलती है	42
26	पोषण बाड़ी बनी स्वस्थ जीवन का आधार	44

उदास मौसम में संघर्ष और खुशी की कहानियां

चट्टानों से पार जाती हौसलों की उड़ान

छोटी जोतों से बनी बड़ी साझेदारी की पहल

सचिन कुमार जैन

झारखंड के पालकोट विकासखंड का लिटिम गांव चट्टानों के विशाल पहाड़ों से घिरा हुआ है। लिटिया नाम की छोटी चिड़िया के नाम पर बसे इस गांव के 8 किसान परिवारों ने साझा उद्यानिकी का प्रयोग किया और खेती की मौजूदा समस्याओं का समाधान निकाला है। एकीकृत और टिकाऊ कृषि पर केंद्रित 'पहल' कार्यक्रम के अंतर्गत यहां के ठस्कु राम, शिवनारायण, तेजेश्वर, कर्मा, महादेव सिंह, कृष्णा, जगजीवन और रामप्रसाद ने अपनी-अपनी छोटी जोतों को मिलाकर 5 एकड़ के क्षेत्र में सब्जियों के उत्पादन के लिए साझा खेती (पहल वेजीटेबल कलस्टर) के लिए एकजुट हुए। वर्ष 2021 से शुरू किए गए इस प्रयोग के कारण इन आठ किसानों ने एक साल में 5 लाख रुपए लाभ देने वाली लगभग 2 टन सब्जी का उत्पादन किया है। इसमें रसायनों का कोई इस्तेमाल नहीं हुआ।

इस समूह के सक्रिय सदस्य ठस्कू राम बताते हैं कि 'हमें अपनी एक बीघे से भी कम जमीन पर वर्ष में चार बार उपज मिलती है और हर उपज से उन्हें लगभग 13 हजार रुपए की शुद्ध आय हो रही है यानी लगभग 50 हजार रुपए की सालाना आय। पहले हम इस जमीन पर इतनी कम सब्जी कर पाते थे कि घर की भी जरूरत पूरी नहीं हो पाती थी, लेकिन पहल कार्यक्रम के सहयोग के कारण हम न केवल आय बढ़ी है, बल्कि घर की सब्जी की जरूरत भी इसी से पूरी कर रहे हैं'। वे बताते हैं कि करेला, लौकी, धनिया, हरी मिर्च, शिमला मिर्च, गोभी, टमाटर, बोदी, कद्दू, प्याज, लहसुन समेत 11 तरह की सब्जियां पैदा हो रही हैं और उपज को नियमित रूप से पालकोट बाजार में बेचा जाता है।

इस साझा खेती में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली नोमी देवी बताती हैं कि "पहल कार्यक्रम की किसान पाठशाला से हमें इस उम्र में नई शिक्षा हासिल करने का मौका मिला। जब सब्जियों का उत्पादन शुरू किया गया, तब शुरू से ही यह तय किया गया कि हम रासायनिक खाद और दवाई नही डालेंगे। गांव के कई किसानों के खेत की मिट्टी इतनी कड़क हो गई थी कि उसकी जुताई ही नहीं हो पा रही थी, लेकिन गोबर और प्राकृतिक कचरे की खाद से अब मिट्टी नरम होने लगी है। हम जीवामृत और घन जीवामृत डाल कर मिट्टी को फिर से जिंदा कर रहे हैं। जब फसल में कोई बीमारी लगती है, तो नीमास्त्र का इस्तेमाल करते हैं, जो नीम की निंबोली से बनता है।'

विकास संवाद द्वारा एचडीएफसी बैंक- परिवर्तन के सहयोग से संचालित पहल कार्यक्रम का उद्देश्य है कि खेती में अब होने वाले भारी खर्चों (लागत) को कैसे कम किया जाए और किसानों की आय बढ़े? इसके लिए 'अपने बीज, स्थानीय खाद, प्राकृतिक औषधि' के माध्यम से मिट्टी और उपज प्रबंधन किया जाए। इसके तहत जैविक खाद, मिट्टी के पोषक तत्वों और कीट प्रबंधन की नीति को अपनाया गया है।

नोमी देवी बताती हैं कि डेढ़ साल से कोई रासायनिक खाद या कीटनाशक नहीं ला रहे हैं। इसी से 10 हजार रुपए की बचत हो गई है। देशज खाद से उपजी सब्जी का स्वाद भी बहुत अलग होता है। पहले तो सब्जी में खूब तेल और मसाला डालना पड़ता था ताकि स्वाद आए। लेकिन अब जो उपज आती है, उसे कम तेल और बहुत कम मसाले से बघार देने पर ही बहुत स्वाद आ जाता है'।

नोमी देवी कहती हैं, 'पहले जब रासायनिक खाद डालते थे तो उपज तो ज्यादा होती थी, लेकिन मन अच्छा नहीं रहता था। अब उनसे लिटिम गांव की ही नहीं, बल्कि दूसरे गांवों की महिलाएं देशज खाद बनाना सीखना चाहती हैं।'

इस समूह के दूसरे किसान कृष्णा और कांति देवी ने न केवल खेत की जमीन पर सब्जियां उगाईं, बल्कि परियोजना की सोच से प्रभावित होकर अपने घर में ही लगभग 500 वर्गफीट में पोषण वाटिका लगा ली है और उसकी देखरेख बहुत मेहनत से करते हैं।

कांति देवी कहती हैं कि 'पोषण बगिया लगाने से सब्जी तो मिल रही है, लेकिन इसमें काम करने से मन को भी अच्छा लगता है। इस बगिया से केवल हम अपने लिए सब्जी नहीं लेते हैं, बल्कि गांव के दूसरे परिवार भी लेते हैं। इससे आपसी रिश्ते भी मजबूत हुए हैं। प्रेम बढ़ा है।'

पहल कार्यक्रम के तहत सबने मिलजुल कर तय किया कि ठस्कु राम की जमीन पर जो कुआं है, उसकी बुनियाद मजबूत की जाए। ठस्कु राम कहते हैं कि 'उनके मन में यह बात नहीं है कि मेरे कुएं से बाकी के दूसरे आठ किसानों की जमीन क्यों सींची जा रही है? अगर मिलकर काम कर रहे हैं तो ही जमीन के छोटे से टुकड़े का इतना लाभ हुआ, वरना क्या होता? हमसे पहल कार्यक्रम के लोगों ने कई बार बात की, योजना बनाने में मदद की, कुआं ठीक कराया, देशी खाद बनाना सिखाया, तब जाकर परिणाम आए'।

सूरज की ऊर्जा से आ रहा है किसानों के जीवन में उजाला

सचिन कुमार जैन

झारखंड के गुमला जिले के जरजट्टा गांव के सोमेश्वर भगत एक समय पर 10 रुपए के लिए भी मोहताज रहे, लेकिन अब हर समय उनके पास 500 रुपए रहते हैं। खेती की जमीन है, लेकिन कुएं सूख जाते थे, इस बार जायद यानी रबी और खरीफ के बीच की फसल भी की। पहले आलू की खेती नहीं की थी, लेकिन इस बार अक्टूबर से मई के बीच तीन बार आलू निकला और 12 हजार रुपए कमाए। तीन बार टमाटर की तुड़ाई कर 10 हजार रुपए अर्जित किए। अब जून में मक्का और मूंगफली डालेंगे। यह बदलाव कृषि में परिवर्तन की पहल के कारण आया।

इस गांव में सिंचाई के लिए 5 हार्स पावर का सौर ऊर्जा प्लांट लगाया गया है और पानी के लिए तालाब बनाया गया। इससे एक ही वर्ष में 20 छोटे किसानों ने लगभग 3 लाख रुपए की अतिरिक्त आय अर्जित कर ली है, जो उनकी पिछले वर्ष की आय से 30 प्रतिशत ज्यादा है। इसके अलावा इन परिवारों ने अपनी साल भर की सब्जियों की जरूरत को अपनी खेती से पूरा करके लगभग 90 हजार रुपए की बचत भी की।

जरजट्टा गांव के किसान भी उन्हीं समस्याओं से जूझ रहे थे, जिन समस्याओं से भारत के बाकी किसान जूझ रहे हैं यानी पानी की कमी, मौसम की अनिश्चितता, छोटी-छोटी जोतें, पूंजी का अभाव और कीमतों के उतार-चढ़ाव। ऐसे में यहां के 20 किसानों ने मिलकर ऐसा रास्ता बनाया है, जो समाधान की तरफ जाता है।

इस समाधान के पांच स्तंभ हैं। पहला स्तंभ है सिंचाई के लिए सौर ऊर्जा का उपयोग। जरजट्टा में पहल के माध्यम से पांच हॉर्स पावर का सौर ऊर्जा प्लांट लगाया गया है। इसे 20 किसानों की लगभग 12 एकड़ जमीन सिंचित हो रही है। जरजट्टा के सुखदेव भगत वर्ष 2020 में अपनी डेढ़ बीघा जमीन से एक या दो बार ही सब्जी की फसल कर पाते थे और उनकी आय लगभग 15 हजार रुपए तक हो पा रही थी, लेकिन अप्रैल 2022 से अप्रैल 2023 के बीच उन्हें सौर ऊर्जा प्लांट से लगभग 200 मीटर दूर बने तालाब से सिंचाई के लिए पानी मिला और उन्होंने अपनी आय को 28 हजार रुपए तक पहुंचा लिया है। सुखदेव बताते हैं कि "मैं पहले साल के 6 से 8 महीने ही खेती कर पाता था, लेकिन अब स्थितियां बदली हैं और अब पूरे 12 महीने फसल लेने की स्थितियां बन रही हैं। मेरी जमीन में टमाटर, आलू, प्याज, नेनुआ, करेला, गाजर, चुकंदर, कद्दू, तरबूज की उपज हो रही है।" पहल कार्यक्रम से स्थापित सौर ऊर्जा प्लांट के प्रबंधन और संरक्षण की जिम्मेदारी जरजट्टा गांव की ग्राम विकास समिति ही उठा रही है।

इस पहल का दूसरा स्तंभ है सतही पानी का उपयोग। जरजट्टा के सोलर प्लांट के पास ही एक तालाब का भी निर्माण किया गया है ताकि भूजल का उपयोग न करना पड़े। ग्राम विकास समिति के अध्यक्ष नवरंग भगत कहते हैं कि अब सब जगहों पर बोरिंग हो रही है, लेकिन इससे जमीन के अंदर का पानी खतम हो रहा है। हम अपनी खेती को भी अच्छा करना चाहते हैं, आय भी बढ़ाना चाहते हैं, लेकिन साथ ही पानी का संरक्षण भी करना चाहते हैं। इसीलिए सोलर प्लांट को तालाब के पानी से जोड़ा है।

तीसरे स्तंभ के रूप में जरजट्टा में मिट्टी, बीज और फसल प्रबंधन के लिए देशज तकनीक से खाद और कीट प्रबंधन की सामग्री बनाई जा रही है। इसमें गौमूत्र, गोबर, टूटे हुए पत्तों, खेती के अवशिष्ट आदि से कंडापानी, घनजीवामृत बनाया जा रहा है। सुखदेव भगत कहते हैं कि इससे एक बड़ा परिवर्तन आया है। रासायनिक उर्वरक के इस्तेमाल से उपजी सब्जी की तुलना में देशज तरीकों से उपजी सब्जी का स्वाद बहुत अच्छा तो है ही, लेकिन इसके साथ ही इससे उपजी प्याज को हम 10 महीने तक भंडार में रख पा रहे हैं। पहले प्याज 6 महीने तक ही रख पाते थे।

फागेश्वर उरांव एक युवा हैं और कम ही खेती कर रहे थे, लेकिन उन्होंने सोलर प्लांट और देशज तकनीक का उपयोग करके केवल 10 डिसिमल जमीन पर टमाटर की उपज से 12 हजार रुपए का अतिरिक्त लाभ कमाया। कंडा पानी के इस्तेमाल से टमाटर के पौधे 6 महीने तक बने रहे और एक पौधे ने साढ़े सात किलो टमाटर दिए।

सोमेश्वर भगत का आकलन बहुत गहरा है। वे कहते हैं कि कोई व्यक्ति साल में दो लाख कमाने के लिए नौकरी करता है, लेकिन उस नौकरी के लिए मंहगी शिक्षा पर 20 लाख रुपए खर्च करता है, तो उसकी वास्तविक कमाई कितनी हुई? हमें समझ आया है कि अगर 50 डिसिमल जमीन भी किसी के पास है तो वह साल में 75 हजार रुपए कमा सकता है, बस अच्छा प्रबंधन और अच्छी व्यवस्था चाहिए। अब हम सबको खेती में जुनून के साथ जुटने का मन करता है।

वे कहते हैं कि जब हम विकास संवाद और एचडीएफसी-परिवर्तन से जुड़े तो हमें इस कार्यक्रम पर बहुत विश्वास नहीं था, लेकिन इस समूह ने पहले हमारे गांव और लोगों को समझा और समझ कर सोलर प्लांट की योजना बनाई, तो हमें थोड़ा विश्वास हुआ। दूसरी बात यह कि पहले हम सब लोग अपना-अपना फायदा ही देख रहे थे, लेकिन विकास संवाद ने हमें साझा पहल करने के लिए तैयार किया। ईर्ष्या, द्वेष, क्लेश और आपसी भेद को छोड़कर एक साथ बिठाया। अगर ऐसा नहीं होता तो पूरी पंचायत में कोई एक किसान ऐसी सिंचाई व्यवस्था बनाने में सक्षम नहीं था। जब एक साथ जुटे, तो सक्षम हो गए।

चौथा स्तंभ है नुकसान से सुरक्षा की साझा पहल। सोमेश्वर भगत कहते हैं कि अभी भी कई बड़ी बाधाएं पार करना है और केवल गांव के लोग खुद पहल करके ही इनसे पार जा सकते हैं। अभी पशु पालने वाले लोग अपने मवेशियों को चरने के लिए खुला छोड़ देते हैं, इससे फसल को नुकसान पहुंचता है। अब एक बड़ी सभा करके इसके लिए व्यवस्था बनाने वाले हैं। दूसरी बात यह है कि अब सब मिलकर तय करेंगे कि कौन सी फसल करना है ताकि एक बार में किसी सब्जी की बहुत उपज हो जाने के कारण उनके दाम गिर न जाएं। तीसरी बात यह कि सबको अपनी-अपनी फसल बेचने मंडी न जाना पड़े, इसलिए मिलकर तय करेंगे कि पूरे गांव की फसल कोई एक दो लोग ही बाजार में बेच आएं।

परिवर्तन की इस पहल का पांचवा स्तंभ है अपने पोषण व्यवहार में बदलाव लाना। व्यापक अनुभव यह है कि जो उत्पादन किया जा रहा है, वह बाजार में बेचने के लिए चला जा रहा है। जरजट्टा में अपने खेत की उपज को अपनी थाली में लाने की बात को मुनाफे और कमाई के बराबर ही महत्व दिया गया है ताकि महिलाओं और बच्चों के पोषण की स्थिति में सकारात्मक बदलाव आ सके।

भारत में खेती के काम से जुड़ी समस्याएं हल की जा सकती हैं। इसके लिए समाज, सरकार और सामाजिक संस्थाओं को, विश्वास और समझ पर आधारित एक मजबूत रिश्ते में बंधना होगा।

जिनकी समस्या है, उनके पास समाधान भी हैं

अमरदीप कच्छप

अपना जीवन बदलने का लक्ष्य अपने भीतर से ही आता है और जब यह लक्ष्य भीतर से आता है, तब व्यक्ति इंतजार नहीं करता कि कोई बाहर से, सरकार से आएगा और उसके जीवन की चुनौतियों को निपटाएगा। रंधु खड़िया अपनी मेहनत से पानी रोकने के लिए छोटी सी जलधारा पर हर साल बांध बनाते और हर साल नदी उसे बहा कर ले जाती। अंततः सहभागी तरीके से विकास योजना बनाकर सीमित संसाधनों से स्थाई बांध बना और इससे उनकी आय 35 हजार रुपए से बढ़ कर 50 हजार रुपए हो गई और फसल का सालाना चक्र चल पड़ा। घर की थाली भी अपने खेत से ही चलने लगी।

बागेसरा गांव के रंधु खड़िया की कहानी इसी सिद्धांत पर खड़ी हुई है। गांव में केवड़ा डाड़ी (पानी की एक झिर या भूजल स्रोत, जिससे वर्ष भर पानी निकलता रहता है) से एक जलधारा निकलती है और दो सौ मीटर दूर से बहने वाली कोयल और मरदा जैसी विशाल नदियों में मिल जाती है। जहां इस धारा का नदी से मिलन होता है, ठीक उसी मुहाने पर रंधु खड़िया की डेढ़ एकड़ की खेती की जमीन है। इन्हीं किनारों के खेतों पर काम में जुटी छेदन देवी कहती हैं कि 'ये नदियां बहुत बड़ी हैं, लेकिन अब गर्मियों में इनमें पानी नहीं रहता है, इसलिए रबी और जायद की फसल लेना कठिन होता है।'

इस विवरण से ऐसा लगेगा कि रंधु के लिए तो फिर वर्ष भर खेती करना बहुत आसान रहा होगा, लेकिन यह सच नहीं है। जब बारिश का मौसम होता, तब नदी में खूब तेज बहाव रहता और अक्सर नदी की धारा केवड़ा डाड़ी के नाले के रास्ते से गांव में घुस जाती और लगभग 50 एकड़ की खेती के लिए समस्या छोड़ जाती।

रंधु कहते हैं कि 'थोड़ी सी खेती है, लेकिन सिंचाई की समस्या रहती थी, इसलिए हर साल अपने खेत की ही मिट्टी को उठाकर केवड़ा दाड़ी के नाले पर पानी को बांधता था। वहीं से पंप लगाकर सिंचाई करता। इससे रबी की फसल हो जाती थी, लेकिन खेत की 15-17 ट्रेक्टर मिट्टी भी चली जाती थी क्योंकि बांध उसी से बनता था।'

इसके दूसरी तरफ केवड़ा डाड़ी के नाले की जलधारा को भी रोकने का कोई साधन नहीं था और वह पानी बह कर निकल जाता था। 10 साल पहले रंधु को इतना समझ में आ पाया था कि केवड़ा दाड़ी की धारा को रोककर ही खेती की जा सकती है और उन्होंने उस साल बारिश के चले जाने के बाद केवड़ा दाड़ी के नाले पर मिट्टी का बांध बनाना शुरू कर दिया। लगभग 6 महीने वह बांध रहता और जब अगली बारिश में नदी में भरपूर पानी आता, तब वह रंधु के बांध को बहाकर ले जाता। रंधु बारिश के चले जाने के बाद फिर बांध बनाते और फिर नदी बांध को बहाकर ले जाती। रंधु आगे कहते हैं कि 'जब हम ये बांध बनाते थे, तो 10 साल पहले हर साल 2 से 3 हजार रुपए खर्च हो जाते थे, यह बढ़ते-बढ़ते 10 हजार रुपए हो गया। अगर यह बांध नहीं बनता, तो खेत मिट्टी से खाली हो जाता।'

पहल कार्यक्रम से जुड़े विकास मित्र अमरदीप कच्छप बताते हैं कि "जब वर्ष 2021 में ग्राम विकास समिति बनी और किसानों की आय को बढ़ाने के उद्देश्य से योजना बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई, तब यह विकल्प सामने आया कि केवड़ा डाड़ी की जलधारा पर छोटा बांध बनाया जाए। यह गांव के लोगों का ही निर्णय था। इसी आधार पर पहल कार्यक्रम के तहत बागेसरा का चेकडैम बना। 'प्रभा देवी कहती हैं कि 'अब इस छोटे से बांध के कारण मरदा नदी की धारा के गांव में घुसने की गति भी धीमी हो गई है और 10 किसानों की 13.20 एकड़ जमीन में वर्ष भर खेती हो पा रही है।' विकेंद्रीकृत नियोजन की पहल से 10 किसानों की आय में लगभग 35 प्रतिशत

की वृद्धि हो गई है। रंधु ने गर्मी यानी जायद की फसल में पहली बार मडुआ बोया है और यह फसल अच्छी-खासी विकसित हो गई है। दुक्खन उरांव कहते हैं कि हमारे यहां की मूली अब स्थानीय बाजार में बहुत मांगी जा रही है। मैनें 15 हजार रुपए की मूली बेंची है। रंधु ने भी इतनी ही मूली बेंची।'

बागेसरा के ये किसान कितनी तरह की खाद्य सामग्री उगा रहे हैं, वह सूची चौंका देती है। रबी, खरीफ और जायद के दौरान खेत में टमाटर, मिर्च, करेला, दलहन, मडुवा, धान, मूंगफली, गोभी, आलू, मटर, सरसों, चाइनीज साग, लेट्यूस, भिंडी, मूली पालक, धनिया, बरबटी होती है। अपनी उपज को बेचने ये किसान बाघमा, पालकोट, कुम्हारी बाजार जाते हैं।

बागेसरा के अनुभव बताते हैं कि समुदाय के अनुभवों और आंकलन से केवल समस्याओं के बारे में ही पता नहीं चलता है, बल्कि उन समस्याओं के कारणों और उनके निराकरण के विकल्प भी मिलते हैं। सामाजिक नागरिक संस्थाओं की मूल भूमिका सभी सूत्रों को जोड़कर एक कार्यक्रम बनाने और संसाधनों के जवाबदेय प्रबंधन की होती है।

चट्टानों से पानी निकालने का जज्बा

मेनका कुमारी

कहते हैं कि दुनिया में कोई काम असंभव नहीं, बस हौसले और मेहनत की जरूरत है। कुछ ऐसी ही कहानी है पालकोट के मरदा गांव के निवासी हरि साहू की। पालकोट प्रखंड से कुछ 13 किलोमीटर की दूरी पर बसा है एक छोटा सा गांव मरदा जहां करीब 150 परिवार रहते हैं। इनमें से अधिकतर परिवारों की मुख्य आजीविका कृषि, मजदूरी एवं पशुपालन से चलती है। गांव की भौगोलिक बनावट ऐसी है कि लगभग एक तिहाई जमीन चट्टानों से घिरी है। इसलिए पानी का सदैव अभाव रहता है। ग्रामीणों को अपने दैनिक जीवन की पेयजल के लिए भी काफी मशक्कत करनी पड़ती है। गांव के ठीक सामने से रांची-सिमडेगा मुख्य मार्ग पड़ता है जो आगे चलकर बघिमा तक पहुँचता है।

इसी गांव के कृषक परिवारों में से एक परिवार है हरि साहू का। 3 कमरे के मिट्टी के कच्चे मकान और मकान के ठीक सामने सरकार की तरफ से घर-घर पानी पहुँचाने के लिए एक छोटा सा नल लगा है जिससे अपेक्षा है कि यह बारहों मास पानी देगा, पर पानी की एक बूंद भी कभी नहीं टपका। गर्मी के कारण घर पर खपरे की छत की छाँव के नीचे हम हरि साहू की पत्नी कसीला देवी से बातें करते-करते उनका इंतज़ार कर रहे थे। वह अपने घर से लगभग 1 किलोमीटर की दूरी पर स्थित 2 एकड़ टाँड जमीन पर हर दिन किसान पाठशाला में लगी सब्जियों की खेती देखने जाते हैं। किसान पाठशाला विकास संवाद और एचडीएफसी बैंक का एक नवाचारी प्रयोग है जहां गांव के किसानों को खेती-बाड़ी का प्रशिक्षण देकर उन्नत खेती के तरीके बताये जाते है। कसीला देवी से बात करने पर पता चला कि उनकी एकलौती पुत्री का विवाह करने के लिए दोनों पति-पत्नी के जीवन भर की कमाई लग गयी। बिटिया लाड़ली थी तो पिता ने भी विवाह में कोई कसर न रहने दी और बड़ी धूम-धाम से बेटी को विदा किया। बेटी के जाने से घर सूना लगने लगा और रह-रह कर याद सताने लगी। ऐसे में शादी में हुआ खर्च भी पुनः जुटाना था और समस्याओं से भी निपटना था।

केवल धान की खेती करने वाले हरि साहू ने अपनी जमीन पर सब्जी-भाजी की खेती कर मन लगाने की कोशिश की, पर हर बार बात पानी पर अटक जाती। खेती बिना पानी के हो नही सकती थी, इसी कारण अब साहू जी ने कुआं खुदवाने का निर्णय लिया। कुछ समय बाद कुआं निर्माण कार्य आरंभ हुआ किंतु दुर्भाग्यवश कुएं में पानी की जगह पत्थर निकला। अपने हौसलों को बुलंद रखते हुए साहू जी ने पत्थरों से लड़ते और उन्हें तोड़ते हुए आखिर जलस्रोत निकाल ही लिया। लेकिन इस कुआं को खोदते-खोदते हरि साहू के लगभग 2 लाख रुपए खर्च हो गए। वो कहते हैं 'ना गरीबी में आटा' गीला। उनके पास जो थोड़ी बहुत जमा पूंजी विवाह के बाद बची थी, वह भी खत्म हो गयी। अब न तो उनके पास बीज व खाद खरीदने के पैसे थे और न कोई अन्य चारा।

ऐसे ही समय में विकास संवाद के कार्यकर्ता उनके लिए आशा की किरण बन कर आये और उनके हौसले को सहारा देने का किरदार बनने। पहल परियोजना अंतर्गत किसान पाठशाला के निर्माण हेतु कार्यकर्ता सड़क किनारे लगभग 1 एकड़ की जमीन की तलाश में हरि साहू के पास आये। साहूजी अपने खेत को हर वर्ष की भाँति खाली छोड़ देने के निर्णय से केवल 1 दिन दूर थे, लेकिन उन्हें उसी दौरान किसान पाठशाला उनकी इस जमीन पर आरम्भ करने के लिए प्रस्ताव मिला, जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिल गया हो। साहू जी ने झटपट हामी भर दी। मेहनती साहू जी ने पहले वर्ष 2 में से 1 एकड़ किसान पाठशाला को दी और इस प्लॉट में 10 अलग-अलग सब्जियां लगाकर 5000 रुपए की कमाई की। इसमें खाद, बीज व कृषि उपकरण की लागत और बचत के रूपये मिला कर उनकी कमाई 9,500 रुपए तक हो गयी। ऐसे मे हरि साहू और उनकी पत्नी का मनोबल बढ़ने लगा और दोनों ने दूसरे वर्ष पूरे 2 एकड़ में खुद अपने रुपयों से बाजार से बीज-खाद खरीद कर तरबूज, खीरा और

करेला लगाकर 60,000 रुपए की कमाई की।

फरवरी माह में लगातार 4 साप्ताहिक बघिमा बाजार में साहू जी ने लौकी, टमाटर एवं मिर्ची बेचकर ही केवल 12000 रूपये तक की कमाई की। उन्हें तरबूज की अच्छी कीमत पालकोट व गुमला बाजार मे मिल जाती थी। तो सब्जियों को ऑटो में भरकर बाजार ले जाते। उन्होंने लगभग 3 टन मीठे तरबूज का उत्पादन भी किया।

पिछले दिनों हरि साहू ने किसान पाठशाला में नई उन्नत कृषि तकनीक के बारे सुना और अपने खेत मे लागू भी किया। सबसे ऊपरी सतह पर करेला लगाया जिससे प्रेरित होकर बगल के गांव के जेठू गोप ने लीज पर 4 एकड़ प्लॉट लेकर करेला की खेती की और 17,900 रुपए का शुद्ध मुनाफा कमाया था। मेहनत के बल पर हरे-भरे लहलहाते खेत देखकर आते-जाते राहगीर भी मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। हरि साहू की मेहनत वाकई सराहने योग्य तो है ही, बल्कि प्रेरणादायी भी है। जब वे हिम्मत हार चुके थे तो उन्होंने जोखिम लिया और सिर्फ अपना ही नहीं, बल्कि गांव के लोगों की सोच का भी बदल दिया। आज उनके खेतों में बोदी, लौकी, बैंगन के साथ-साथ भिंडी और बीस-बाईस तरह की सब्जियां देखने को मिल रही हैं जो न सिर्फ पोषण बढ़ाती हैं बल्कि जैव विविधता में भी योगदान देती हैं। अब धीरे-धीरे वे पूंजी फिर से जमा कर रहे हैं ताकि अपनी बिटिया और उसके बच्चों से मिलने पटना जा सकें।

हरि साहू जी गांव में ही नहीं, बल्कि आसपास के गांवों के लिए भी एक रोल मॉडल बनकर उभर रहे हैं। अपनी बढ़ी हुई आय के बारे में और नए प्रयोगों के बारे में वे लोगों से बहुत सहज होकर चर्चा करते हैं और कहते हैं कि 'हिम्मत हो तो चट्टानों से भी पानी लाकर हम बढ़िया खेती कर सकते है।'

हरि साहू समाज को यह संदेश देना चाहते हैं कि जिस प्रकार खेती करने की विविधता को किसान पाठशाला से समझा हूँ और अपने खेती करने के कार्य में लागू किया हूँ, उसी से हमारे खाने में भी विविधता आई है, साथ ही आय में भी वृद्धि हुई है। वे कहते हैं कि सभी किसान भाइयों को खेती की विविधता पर कार्य करना चाहिए।

पोषण बाड़ी की पहल, कठिन समस्या का हल

द्रोपदी कुमारी

रूमी देवी रायडीह प्रखंड स्थित सुरसंग पंचायत के ग्राम तुल्मुंगा के सरईटोली की रहने वाली हैं। उन्हें पोषण बाड़ी के लिए ग्राम विकास समिति के सदस्यों द्वारा चुना गया था क्योंकि उनके घर की आर्थिक तंगी के कारण वह पोषण बाड़ी लगाने में असमर्थ थीं। सबसे बड़ा कारण यह था कि रूमी देवी के पास खेती के लिए जमीन तो थी, लेकिन बीज और खाद खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। जो पैसे थे भी, वे रोजाना के खान-पान में ही खर्च हो जाते थे। भोजन की थाली में सब्जी के नाम पर ज्यादातर आलू की सब्जी ही होती थी, कभी-कभी तो खाने की थाली में सब्जी के बदले सिर्फ पतली दाल ही खाई जाती थी। नतीजा यह निकला कि उनके दोनों छोटे बच्चे कुपोषण के शिकार हो गये। चूँकि घर में कमाने वाले सिर्फ एक व्यक्ति ही थे और वे भी मजदूरी का काम किया करते थे, तो बच्चों की सही देखभाल नहीं हो पाती थी। बच्चों की देखभाल करने की वजह से रूमी देवी थोड़ी मात्रा में खेती, जैसे आलू-प्याज की खेती करती थी, उन्हें उस खेती को भी छोड़ना पड़ा। इन सबकी वजह से उनके आय का जरिया खत्म होने लगा और वह आर्थिक तंगी की चपेट में आ गई।

पहल परियोजना के पोषण बाड़ी गतिविधि के अंतर्गत गांव के लोगों ने मिलकर रूमी देवी के परिवार को पोषण बाड़ी का लाभार्थी चुना। रूमी देवी का कहना है कि 'पोषण बाड़ी मिलने से उसका परिवार आज के समय में अपने दैनिक जीवन के आहार में पोषणयुक्त भोजन को शामिल करने में समर्थ हैं। पोषण बाड़ी में 7-8 तरह के बीज, जैसे साग, सब्जी और सलाद वाले बीज, लगाये जाने से परिवार के लिए प्रत्येक दिन हरी-भरी सब्जियाँ मिल रही हैं।' जब रूमी देवी ने मेहनत की तो बाड़ी से उत्पादन अधिक होने लगा और इस अतिरिक्त उत्पादन को वे आसपास के साप्ताहिक बाज़ार में बेचकर लगभग 1000 रूपये की आमदनी हर सप्ताह करने लगीं। रूमी देवी ने लगभग दो महीने तक साप्ताहिक बाज़ार में सब्जियों को बेचकर लगभग 10000 आमदनी प्राप्त कर पाई। नतीजतन इनके परिवार के दैनिक आहार और आय में सुधार आया। उन्होंने जो पोषणबाड़ी लगाई थी, वह मंडला आकार में थी और उस बाड़ी की पहचान पूरे गांव में होने लगी।

इसी के साथ-साथ बच्चों के कुपोषण को दूर करने के लिए विकास संवाद की टीम के द्वारा मासिक सहभागी पठन-पाठन (पीएलए) की बैठक के दौरान स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधित जानकारी दी जाती है, जैसे-आयरन युक्त भोजन के आहार में बढोतरी, 1-5 वर्ष के बच्चे को 4 बार भोजन खिलाना, बराबर आंगनबाड़ी जाकर बच्चों को दिखाना, कुपोषित बच्चे को कुपोषण उपचार केंद्र में इलाज कराना, आदि। इन सभी जानकारियों को रूमी देवी ने भी बैठक के दौरान प्राप्त किया और अपने दोनों कुपोषित बच्चों को कुपोषण उपचार केंद्र, गुमला में टीम के सहयोग से भर्ती करवाया। आज बच्चे भी स्वस्थ हैं और रूमी देवी अपने गांव के साथ नजदीक के गांवों में यह जानकारी देती हैं।

भीकराम की संघर्ष यात्रा

द्रोपदी कुमारी

पालकोट प्रखंड मुख्यालय से 14 किलोमीटर दूर स्थित है मरदा टोंग्री टोली। यह गांव बगेसेरा पंचायत के अंतर्गत आता है। इस गांव में 40 आदिवासी कृषक परिवार रहते हैं। इन्ही परिवारों में से एक परिवार है भीकराम खड़िया का जिनकी पत्नी लगभग दो वर्ष से टीबी से ग्रस्त थीं। आर्थिक तंगी के कारण सही समय पर इलाज न होने से आखिरकार उनका निधन जून 2018 में हो गया। परिवार ने जैसे-तैसे उनका अंतिम क्रियाकर्म किया। अब भीकराम के सामने अपनी मातृविहीन 3 संतानों (2 पुत्री तथा 1 पुत्र) का भरण-पोषण करना मुश्किल था और आज भी वे यह काम बड़ी कठिनाइयों से कर रहें हैं। कभी-कभी बड़ी बेटी स्कूल से आकर घर के कामों में अपने पिता का हाथ बंटाती है और स्थानीय बाज़ार में सब्जियों की बिक्री में सहयोग करती है। इससे भीकराम को थोड़ी मदद मिल जाती है। भीकराम के पास कृषि के सिवा आय का और कोई दूसरा स्रोत नहीं है और हम जानते हैं कि पूँजी रहित एकल परिवार में कृषि कार्य करना नाकों तले चने चबाने जैसा होता है। ऊपर से केवल मानसून आधारित खरीफ की फसल जैसे-तैसे कर पाते हैं। पानी के अभाव में सब्जियों की खेती नहीं कर पाते। बगैर आय के एकल परिवार में बाज़ार की सब्जी कितने दिन टिक पायेगी? अधिकाधिक दिन वे अपने परिवार के लिए सब्जी नहीं खरीद पाते हैं। उन मातृविहीन बच्चों के जुबां पर सब्जियों का स्वाद कैसे पहुँचता! यों कहा जाये कि बच्चों का भरण तो हो रहा था, परंतु पोषण नहीं।

अक्टूबर 2021 में विकास संवाद ने पहल परियोजना का कार्य आरम्भ किया, तो विभिन्न कार्यक्षेत्रों में एक गांव मरदा भी चयनित हुआ। काम शुरू हुआ, तो विकास मित्र गांव में नियमित आने-जाने लगे और गांववासियों के सामाजिक-आर्थिक हालात का मापन एवं गांव की भौगोलिक स्थिति और संसाधानों का भी मापन हुआ। एक दिन गांव के विकास मित्र अमरदीप को भीकराम खड़िया के मातृविहीन बच्चों की करूण कथा के बारे में पता चला। परियोजना में जब मरदा गांव के लिए दो पोषण वाटिका एवं एक डेमो प्लाट का प्रावधान मिला तो उन्होंने डेमो प्लाट के लिए स्थानीय ग्रामीणों की सहमति से लाभार्थी के रूप में भीकराम खड़िया के चयन को प्राथमिकता दिया।

मगर अब सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि खेती कहाँ की जाये क्योंकि खेती के लिए ज़मीन तो थी, पर उस लायक नहीं थी। ऊँची-नीची ज़मीन लगभग 50 डिसमिल थी। एक तरफ एक सूखा पेड़ था। परियोजना के पास भूमि सुधार या मेड़बंदी का भी प्रावधान था। तब यह तय किया गया कि क्यों नहीं उक्त भूमि का उपयोग भूमि सुधार या मेड़बंदी के माध्यम से कराया जाये और डेमो प्लाट के लायक बनाया जाये। फिर सबने मेहनत कर और एड़ी-चोटी का जोर लगाकर उस ज़मीन को समतल करने का काम आरम्भ किया। गांव के सभी लोगों ने इस काम में सहयोग किया। कुल खर्च 17000 रूपये में से 2000 रूपये अंशदान के तौर पर और 15000 रूपये संस्था की ओर से दिये गए। एक सप्ताह के बाद मेड़बंदी का काम पूरा हो पाया। उससे पहले पारी (रबी) की

खेती करने में विलम्ब हो गया था, किन्तु दूसरी पारी (ज़ायेद) में कुछ सब्जियां लगायी गयीं, जैसे करेला, गोंग्रा, बोदी, भिन्डी, इत्यादि और कुछ ज़मीन पर एक किलो मूंग लगाया गया और बहुत बारीकी से अवलोकन कर खेती पर ध्यान दिया गया। चूँकि जमीन बहुत नई थी और इसे खेती लायक बनाया गया था, इस कारण लगभग 15 किलो मूंग का उत्पादन हुआ। यह उत्साहवर्धक था। साथ में थोड़ी हरी सब्जियां भी निकल रही थीं। इससे प्रेरणा लेकर ज्यादा मात्रा में अन्य फसलें और सब्जियां लगाई गई और अब नियमित उत्पादन हो रहा है। इन फसलों को गांव से करीब 8 किलोमीटर दूर दो दिनों के साप्ताहिक बाज़ार (मंगलवार और शनिवार) तथा 16 किलोमीटर दूर पालकोट बाज़ार (सोमवार और गुरुवार) को बिक्री के लिए ले जाया जाता है। भीकराम अपने मेहनत के सकारात्मक परिणाम को देखते हुए तीसरी पारी (जायद) की खेती करने के लिए उत्सुक हैं और वे इसकी तैयारी में भी लगे हुए हैं। अब बच्चों के पालन-पोषण में जो भी दिक्कतें थीं, वे सारी दिक्कतें कम होने लगी हैं और अभी सारे बच्चे स्वस्थ होकर अपनी पढ़ाई में लगे हुए है।

भीकराम खड़िया कहते हैं कि "अभी मैं 20 डिसमिल में टमाटर की खेती कर रहा हूँ जो खाने के उपयोग के साथ-साथ स्थानीय बाज़ार में बिकता भी है। खेत में घेरा होने के कारण जानवरों से भी काफी सुरक्षा है जिससे उपज ठीक-ठाक हो पा रही है। पहले की अपेक्षा आय बढ़ी है। किसान भाइयों को मैं संदेश देना चाहता हूँ कि पहल परियोजना से जुड़कर खेती करने की तकनीकी को समझें और अपनी आय में वृद्धि करें। साथ ही परिवार के लिए पोषणयुक्त भोजन की गारंटी करें।"

सौर ऊर्जा से फैलेगा उजियारा

उषा लकड़ा

गुमला जिला मुख्यालय से लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित जमगईं गांव में बिरहोर आदिवासी समुदाय की एक बस्ती है। दरअसल लंबे समय तक घुमंतू रहने के कारण उन्हें इस गांव में बसना इतना आसन नहीं था। सरकार से इस समुदाय की सुरक्षा एवं विकास के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य करवाने के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास करने पड़े। अभी भी बस्ती तक कोई सड़क नहीं है। इस वजह से उन्हें स्वयं जन वितरण प्रणाली पर जा कर राशन लेना होता है। यह समुदाय भूमिहीन है। आजीविका एक बड़ी समस्या है। बिरहोर समुदाय के लोग रस्सी एवं ओखली बनाकर शहर के बाज़ार में बेचने जाते हैं।

जमगईं गांव के ऊपर पहाड़ पर कुछ घर बने हुए थे। दरअसल जंगली जानवरों के निरंतर आक्रमण होने के कारण लोगों ने वे घर छोड़ दिए थे। जंगली हाथी और भालू से खेत-खलिहान की बर्बादी, घर में रखे उपज पर जंगली हाथी का आक्रमण, जंगली बिल्ली से मुर्गी और बकरी पर आक्रमण, आदि स्थायी समस्याएं थीं। लोगों ने अपनी जान बचाना बेहतर समझा। इससे इस घुमंतू समुदाय को बसने के लिए सरकारी मकानों में अपनी जगह भी मिल गयी। इसके लिए विशेष रूप से प्रखंड विकास अधिकारी से बात की गयी और उनकी सहमति मिलने के बाद समुदाय ने यहाँ बसने का निर्णय लिया। समुदाय के लिए सबसे पहले राशन प्राप्ति के लिए संबंधित विभाग से बातचीत की गयी और इसमें सफलता भी हासिल हुई। जिन लोगों के राशन कार्ड, आधार-कार्ड या किसी भी अन्य दस्तावेज में त्रुटियाँ थीं और जिनके कारण राशन मिलने में या बैंक सम्बंधित कार्यों में दिक्कत हो रही थी, उनके लिए त्रुटि सुधार करने के लिए प्रखंड कार्यालय से संपर्क किया गया। प्रखंड कार्यालय ने भी मदद की और आठ परिवारों के राशन कार्ड और तीन लोगों के आधार कार्ड में सुधार हो पाया। पानी की व्यवस्था सरकार द्वारा की गयी है तथा 2 परिवारों ने घर के सामने सब्जी उगाना भी शुरू कर दिया है। ज्यादातर पुरुष सुबह जंगल की ओर प्रस्थान कर जाते हैं और दिन भर वहां काम करते हैं, शहद इकट्ठा करते हैं, लकड़ी बिनते हैं, फल-कंद उठाते हैं और शाम को घर लौटते हैं। बस्ती में कुल आठ छोटे बच्चे हैं जो पास के सरकारी विद्यालय में पढ़ने जाते हैं। समुदाय के लोगों से मिलने पर पता चला कि सोहन बिरहोर नाम की लड़की इनके समुदाय की पहली बच्ची है जिसने पढ़ाई की है और अब वह अपने परिवार के साथ सिमडेगा के ठेठईटंगर में रहकर 12वीं की पढ़ाई पूरी कर रही है। बिजली की कमी के कारण यहाँ लोग ढिबरी जलाकर रात गुजारते हैं। जंगल के समीप होने की वजह से रात को अक्सर भालू, सांप, सियार, आदि जानवरों का खतरा बना रहता है। बस्ती की एक महिला बिरसी बिरहोर हैं जिनका कहना है कि रात को जानवरों का खतरा अधिक रहता है। केरोसिन तेल महंगा होने के कारण अँधेरे में रहना पड़ता था। इससे बच्चों की पढ़ाई में भी दिक्कत हो रही थी।

पहल परियोजना की शुरुआत में जमगईं के बिरहोर समुदाय के साथ मिलकर बैठक की गयी जिससे उनके बिजली की समस्या मुख्य रूप से उजागर हुई। ऐसे तो इस समुदाय के प्रत्येक परिवार में बिजली की समस्या है, लेकिन परियोजना के सीमित संसाधनों के चलते सोलर लाइट समुदाय के सिर्फ 5 जरुरतमंद परिवार को प्रदान की गयी। पूसा बिरहोर का कहना है कि यदि अगले वर्ष अन्य परिवारों को भी लाइट की सुविधा दे दी जाये, तो बस्ती की आधी दिक्कत खत्म हो जाएगी।

समाधानों का कुआं

अमित कुजूर

झारखंड के दूर-दराज के इलाकों में ईसाई मिशनरियों ने शिक्षा और स्वास्थ्य के साथ-साथ कृषि और विकास के ढेरों काम किए हैं, बल्कि अपने लोकोपकारी कार्यों से धर्म का प्रचार एवं प्रसार भी किए हैं। इन कार्यों के कारण बहुत से वंचित परिवारों ने ईसाई धर्म अपनाया है। कैथोलिक मिशन का एक गिरजाघर गुमला जिले के रायडीह प्रखंड से छह किलोमीटर की दूरी पर माझाटोली में स्थित है और 1950-1970 के दौर में यहाँ के मिशनरी बहुत सक्रिय रहे हैं। गांव-गांव घूमना, लोगों के बीच उपदेशों का प्रसार करना और लोगों की समस्याओं का समाधान करना काफी चला करता रहा है। उसी दौरान केराडीह स्थित विद्यालय में जेम्स टोप्पो नामक अध्यापक पढ़ाने आये।

स्कूल होने के बावजूद वहाँ पानी के लिए लोगों को मोहताज होते देख उन्होंने मिशनरी के सामने इस समस्या का समाधान करने की मांग रखी। गांव में उन दिनों पीने के पानी के लिए कोई जलस्रोत नहीं था जिसके कारण गांव वालों को बगल के गांव से पानी लाने जाना पड़ता था। गांव की महिलाओं को भी पानी लाने जाना पड़ता था। मिशनरी के सहयोग से गांव में बैठक कर बिछन ओरांव के घर के समीप एक कुंआ का निर्माण किया गया जिससे गांव के लोगों को पीने के पानी के लिए दूसरे गांव न जाना पड़े। कुएं की देखभाल के लिए 15 परिवारों को जिम्मेदारी दी गई थी, लेकिन वक्त बीतने के साथ लोगों ने कुएं की देखभाल पर ध्यान नहीं दिया। समय के साथ कई परिवारों मे तरक्की आई और लगभग 4 परिवारों ने अपनी खुद की सहलियत के लिए निजी चापाकल और कुएं खुदवा लिए। समय के साथ गांववासी पानी की किल्लत का अर्थ भी भूल गए। कुआं अब पुराना हो चुका था। पानी की कमी नहीं थी, परंतु घेर न होने के कारण बारिश के दौरान दूषित पानी इस कुआं को गंदा कर देता था जिससे पानी पीने योग्य नहीं रह पाता था। आसपास खेती योग्य जमीन थी, तो खेती के लिए पानी का उपयोग होता रहा।

बिछन ओरांव अब 60 वर्ष के हैं और अकेले ही रहते हैं। पीने के लिए पानी दूर चलकर लाने में भी असमर्थ हैं। जब गांव मे पहल परियोजना शुरू हुई, तो विकास संवाद ने इस समस्या को अपनी प्राथमिकता सूची में रखा क्योंकि इस कुएँ पर अब 20 परिवार आश्रित थे। इसकी मरम्मत कर कुएँ पर चार इंच की दीवार बनाई गयी और कुएं को और गहरा किया गया जिससे बारिश का पानी इसमें न जाए। पानी की छिंटाई से पानी साफ और पीने लायक भी बन गया। बिछन अब पीने का पानी इसी कुएँ से रोजाना ले पाते हैं। इनके साथ-साथ 20 परिवार के लोगो के लिए भी खेती-पटवन, पीने एवं घरेलू कार्यों के लिए अब पानी की कोई कमी नहीं है। सुषमा मिंज कहती हैं कि 'इस बार बारिश का पानी कुआं में नहीं घुसा, तो हम खुश हुए। पानी लेने दूसरे के घर नहीं जाना पड़ा। 'कुएँ की देखभाल के लिए ग्राम विकास समिति के सदस्यों ने जिम्मेदारी लेते हुए कहा, 'अब अगर कुआं खराब हुआ, तो हम लोग ही सभी लाभार्थियों से धन का अंशदान करवाकर कुआं की मरम्मत करवा लेंगे। हालांकि पानी के रिचार्ज का काम अभी भी बाकी है, पर उम्मीद है कि लोग मिलकर इसका भी रास्ता निकाल लेंगे।'

सुबह जरूर होती है

वर्षा रानी बखला

जंगलों एवं पहाड़ों से घिरा राजस्व ग्राम लुंगा प्रखंड रायडीह से 15 किलोमीटर दूर स्थित है। यह गांव सिकोई पंचायत में आता है और पांच बस्तियों में बंटा है। यह गांव पूरी तरह पथरीली जमीन पर बसा है। गांव की उत्तर दिशा में एक पहाड़ी नदी है। यहां सरकारी सुविधाओं के नाम पर एक प्राथमिक पाठशाला और एक आंगनवाड़ी केंद्र है। यह गांव आदिवासी बाहुल्य है और लोगों की आजीविका का मुख्य साधन मानसून आधारित खेती है। गांव के कुछ लोग ही है जिनके खेत नदी किनारे है और इसलिए वे हरी सब्जियों की खेती कर पाते है। खेतिहर परिवारों में से ऊषा केरकेट्टा भी एक किसान हैं। वे अपने पति और एक बेटी व एक बेटा के साथ एक छोटे से मकान में रहती हैं। हाल तक उनके घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी और परिवार खाद्यान्न असुरक्षा की गिरफ्त में था। बच्चे भी सुपोषित नहीं थे।

ऊषा कहती हैं, '2021 में विकास संवाद द्वारा 'पहल परियोजना' लाई गई, तब गांव में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए बैठकें होने लगी, तो मैं भी बैठकों में भाग लेने लगी और धीरे-धीरे जैविक खेती के तकनीकी गुणों और बारीकियों को समझने लगी। एक बार परियोजना की ओर से मुझे (ग्राम विकास समिति के माध्यम से) एक पोषण बाड़ी बनाने का मौका मिला। मैंने अपने घर के बगल में 2 डिसमिल जमीन पर परियोजना द्वारा दिए गए तार का उपयोग करके जाल का बाड़ लगाया तथा जमीन की आवश्यक निंदाई-गुड़ाई कर पूरी तरह जैविक उर्वरक के उपयोग से 10-12 तरह की सब्जियां लगाई। मुझे ये बीज संस्था ने उपलब्ध करवाए थे। मुझे समय-समय पर उचित दिशा-निर्देश मिलने लगा तथा परियोजना द्वारा संचालित किसान पाठशाला में भी प्रशिक्षण प्राप्त करने का मौका मिला।'

जिस परिवार में कभी-कभार ही हरी सब्जियां नसीब होती थी, वहां अब पोषण वाटिका स्थापित होने से प्रतिदिन हरी सब्जियां खाने की थाली को रंगीन कर देती हैं। ऊषा केरकेट्टा की हरी रंग-बिरंगी पोषण बाड़ी को देखकर गांव की अन्य महिलाएं भी प्रेरित हुईं और 6 महिलाओं ने स्वनिर्मित छोटी पोषण बाड़ी लगा ली हैं।

मेड़बंदी के मायने

द्रोपदी कुमारी

आश्रित किंडो गुमला के रायडीह प्रखंड से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर बसे बीरकेरा गांव के निवासी हैं। उन्होंने अपनी स्नातकोत्तर तक की पढ़ाई गुमला कॉलेज से पूरी करने के बाद सरकारी नौकरी के लिए प्रयास किया, परंतु नौकरी नहीं मिलने की दशा में अपना पारिवारिक पेशा खेती बाड़ी करना उचित समझा। आश्रित किंडो का एक बड़ा परिवार है जिसमें कुल 10 सदस्य रहते हैं। उनके परिवार की आय का मुख्य स्रोत खेती ही है। आश्रित किंडो का खेतिहारी जमीन का एक हिस्सा लगभग 70 डिसमिल ढालूनुमा होने के कारण बरसात के मौसम में सारा पानी बह जाता था, जिससे खेत में नमी कायम नहीं रहती थी और इस वजह से उस खेत में खेती संभव नहीं हो पा रही थी। यह समस्या लगभग 30 वर्षों से चलती आ रही थी।

पहल परियोजना की ओर से वर्ष की शुरूआत में जब मेड़बंदी बनाने का प्रस्ताव रखा गया तो आश्रित किंडो ने अपने ज़मीन की समस्या की बात ग्राम विकास समिति की बैठक में रखी। ग्राम विकास समिति ने उनकी समस्या पर विचार किया और मेड़बंदी करने के लिए निर्णय लिया। इस निर्णय के बाद आश्रित किंडो के खेत में मेड़बंदी का कार्य शुरू किया गया। इस कार्य में आश्रित व उसके परिजनों ने श्रमदान किया और इस तरह से मेड़बंदी का कार्य पूरा हुआ। काम बड़ा था, इसलिए अन्य मजदूरों को भी लगाया गया जो गांव के ही निवासी थे। मेड़बंदी में कुल 17,750 रूपए खर्च हुए, मगर मजदूरों ने कुल 15,997 रूपए ही लिए, बाकी की शेष राशि 1777 रुपये मजदूरों ने अंशदान के रूप में नहीं लेने का फैसला किया। जब खेत के ढालू क्षेत्र में मेड़बंदी हो गई, तब बारिश के पानी के बहाव से होने नुकसान की आशंका खत्म हो गई। ऐसा होने से मिट्टी की उपरी सतह में रहने वाले पोषक तत्व जो पौधे के वृद्धि में काम आते हैं, उनके बहाव पर भी नियंत्रण हो गया, जिससे उर्वरता में कमी को रोका जा सके।

वर्ष की शुरुआत में मेड़बंदी होने से आश्रित किंडो को इस वर्ष जटंगी और उड़द की खेती करने में सहायता मिली। आश्रित किंडो कहते हैं कि "70 डिसमिल जमीन जो खेती के लिए उपयोगी नहीं थी, अब हम उस पर खेती कर पा रहे हैं। पहले उस खेत से किसी भी तरह की आय नहीं होती थी, परंतु मेड़बंदी का कार्य होने पर अब खेत खेती करने योग्य बन गया है और हमने इस वर्ष उड़द एवं जटंगी की फसल तैयार की है।" इस वर्ष दाल की खेती होने से आश्रित के परिवार को घर में खाने के लिए बाज़ार से दाल नहीं खरीदनी पड़ी और लगभग 10,000 से 12,000 रूपये का मुनाफा मिला।

कालीचाट से पानी निकाल लाए अगहनी और मुंशी

अमरदीप कच्छप

यह कहानी है जिला मुख्यालय गुमला से 26 किलोमीटर दूर पालकोट प्रखंड के मलाई गांव की। देखने में यह गांव खुशहाल लगता है, मगर हकीकत कुछ और है। गांव में एक ओर समतल मैदान है और दूसरी ओर गांव के बगल में ही बड़ी-बड़ी चट्टानें हैं। इस गांव को पहल परियोजना के तहत चयनित किया गया है। परियोजना का लक्ष्य है कि किसानों की आर्थिक स्थिति बेहतर हो और उनकी आमदनी में कम से कम 30% की अतिरिक्त वृद्धि हो जाए तथा गांव के हर परिवार की आमदनी निरंतर बनी रहे और वे पोषण स्तर में मजबूत हों।

मलई गांव की सबसे बड़ी समस्या यह है कि यहां जलस्तर काफी नीचे है और यहां जल संसाधन के कोई अन्य स्रोत नहीं है। गांव में पानी की समस्या होने के कारण मार्च से जून तक कोई खेतीबाड़ी नहीं होती है। जिनके पास कुएं (4 से 5 परिवारों में) हैं, वे खुद के परिवार के लिए हरी सब्जियां उगा पाते हैं। गांव में पेयजल की व्यवस्था हेतु प्रधानमंत्री नल-जल योजना के अंतर्गत कार्य किया जा रहा है जिसमें कि मरदा नदी से पूरी पंचायत को जोड़ा गया है। गांव के पश्चिम में दो टोला के बीच में एक पानी टंकी का निर्माण किया जा चुका है, लेकिन पीने के पानी की समस्या का समाधान पूरी तरह नहीं हुआ है।

शुरू में इस गांव में पहल परियोजना के लक्ष्य को प्राप्त करना काफी चुनौतीपूर्ण लग रहा था। अगहनी देवी और उनके पति मुंशी साहू इसी गांव के निवासी हैं। मुंशी साहू को वर्ष 2021 में मनरेगा योजना के तहत कुआं खुदाई का अवसर मिला, लेकिन योजना के तहत एक सीमित खुदाई के बाद पानी निकलना मुश्किल हो गया। नतीजतन कुआं खुदाई का काम बंद कर दिया गया।

मलई गांव में कुआं की खुदाई से एक निश्चित जलस्रोत पाना टेढ़ी खीर के समान था क्योंकि गांव चट्टानों से घिरा है। जमीन में कालीचाट है, लेकिन अगहनी देवी के पति मुंशी साहू ने तय किया कि वे हिम्मत नहीं हारेंगे। उन्होंने खुद से कुआं की खुदाई शुरू कर दी, परंतु पत्थर उनके हिम्मत से भी ज्यादा सख्त निकला। मुंशी साहू भी कम सख्त नहीं थे, उन्होंने भी ठान ली थी कि कुआं का निर्माण करना है। उन्होंने पत्थर तोड़ने वाले मजदूरों को बुलाया। वे मजदूर और मुंशी साहू के परिवार वाले लगभग दो महीनों तक लगातार काम करते रहे और तब चट्टानों की भीतर से पानी निकला। कालीचाट को तोड़कर निकला पानी बेहद मीठा था क्योंकि उसको निकालने में इतनी मेहनत जो लगी थी। मुंशी साहू कहते हैं कि 'यह काफी मशक्कत भरा काम था। हमने हिम्मत दिखाई और उस चुनौती को पार कर पाए। इस काम में लगभग एक लाख रुपये लगे। मेरे परिवार के तीन लोगों (मैं, मेरी पत्नी और बेटा) ने 60 दिनों तक श्रम किया।'

वे बताते हैं कि कुंए में जब पानी निकल आया था, ठीक उसी समय पहल परियोजना के तहत उन्हें एक प्लाट पर खेती करने का अवसर मिला। उन्होंने लगभग 80 डिसमिल जमीन के आधे हिस्से में सब्जी की खेती तथा आधे हिस्से में तिलहन, दलहन और अनाज की खेती शुरू की। पति और पत्नी दोनों काफी मेहनत से खेती करने लगे। धीरे-धीरे सब्जी की उपज अधिक होने लगी और आय का स्रोत भी बढ़ने लगे। इस वर्ष की खेती से लगभग 1 लाख से 1.5 लाख रुपयों की आमदनी हुई। वे अपने बेटे को उच्च शिक्षा के लिए गुमला के कॉलेज में प्रवेश कराने में भी सक्षम हो पाए।

अगहनी देवी कहती हैं कि "मेरी आय बढ़ने का मुख्य कारण यह रहा है कि मैं पहले ज्यादा मात्रा में हरी सब्जियों की खेती करती थी, परंतु पहल परियोजना के साथ जुड़ने पर पहले डेमो प्लाट मिला और इसके साथ ही खेती करने के तरीकों के बारे में जानकारियां मिलने से मैंने अपने खेतों में हरी सब्जियों के साथ-साथ अनाज, तिलहन तथा दलहन, आदि भी उपजाने लगी।

तरबूज की लालिमा बिखेरती कसीला देवी

मेनका कुमारी

'मेरी गृहस्थी में है तरबूज की मिठास', ये अल्फाज़ हैं मरदा गांव के टोंग्रीटोली की रहने वाली अत्यंत मेहनती महिला किसान कसीला देवी के। कसीला देवी इस वर्ष केवल तरबूज की खेती से 50,000 रूपए की कमाई कर बाकी महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गई हैं। वह अपनी कहानी स्वयं सुनाती हैं 'मैं कसीला देवी, पति बुधवा गोप, ग्राम मरदा टोंग्रीटोली, पंचायत बगेसरा, पालकोट की निवासी हूँ। मैं एक गरीब-मेहनतकश परिवार से ताल्लुक रखती हूँ। आजीविका के साधन के रूप में मात्र 1.5 एकड़ जमीन है। मैं तथा मेरे पति सिर्फ साक्षर हैं। हमारी 3 संताने हैं- 2 पुत्र और 1 पुत्री जो नजदीक के सरकारी विद्यालय में पढ़ते हैं। मैं और मेरे पति रोजी-रोटी के लिए अपने 1.5 एकड़ जमीन पर मानसून आधारित खरीफ फसल पारंपरिक तरीके से करते रहे हैं जिससे लगभग छह माह का अनाज उपलब्ध हो जाता है तथा कुछ प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना और खाद्यान्न सुरक्षा योजना के तहत मदद मिल जाती है। किसी तरह गुजर बसर हो जाता है, लेकिन बचत कुछ नहीं हो पाती। बच्चे बड़े हो रहे हैं, उनकी पढ़ाई में खर्चा बढ़ेगा और फिर अभी पूरा जीवन पड़ा है। इसलिए हमने इस बार काफी सोच-विचार कर नगदी फसल लगाकर कुछ आय अर्जित करने की पहल की और तरबूज की फसल लगाई।'

कसीला देवी ने अपने पति के साथ धान बेचकर कुछ पैसे अर्जित किए जिससे उन्होंने 25 ग्राम के 6 पॉकेट तरबूज के बीज खरीदे और दिसंबर तक लगा दिया। उनका पूरा परिवार खेत की तैयारी में लग गया और करीब एक माह में खेत भी तैयार हो गया। कसीला देवी कहती हैं कि 'हमारे गांव में 2021 से पहल परियोजना के कार्यकर्ता का आना-जाना है। वे खेती के तौर-तरीके एवं जैविक खेती करने का प्रशिक्षण देते हैं। पहले तो प्रशिक्षण के लिए वहां जाने में संकोच होता था, मगर देखा कि वे सहजता से लोगों की मदद करते हैं और काफी महत्वपूर्ण जानकारी देते हैं, तो मै भी गई और बैठकों में जाकर सीखने लगी। इसी दौरान मैंने जैविक खाद- घनजीवामृत, कंडा पानी एवं नीमास्त्र बनाना सीखा तथा अपने खेत में लगी तरबूज की फसल पर प्रयोग किया। हमारे लिए आश्चर्य की बात थी कि तरबूज की फसल पर यह प्रयोग बहुत सफल रहा। हमने खाद ही नहीं बनाई, बल्कि बाजार से खाद खरीदने वाली राशि की भी बचत की। पहले लगभग हजार रूपये केवल उर्वरक और दवाईयों में ही निकल जाते थे, अब वह राशि भी बच गयी।'

कसीला देवी पके हुए तरबूजों को तोड़कर किराए के ऑटो में भरकर गुमला बेचने के लिए जाती थीं। किसी दिन 20 रूपए प्रति किलो, तो किसी दिन 15 रूपए प्रति किलो के दर से बेचती थीं। वे इन तरबूजों को स्थानीय बाजारों में भी बेचती थीं। वे बताती हैं कि हमारे बच्चों के अलावा गांव के बच्चों ने भी खूब तरबूज खाए। घर के लिए अब तक कुल 50,000 रूपए की आमदनी हुई है। कसीला देवी कहती हैं कि गांव की सभी महिलाओं को खेती में मुख्य भूमिका निभानी चाहिए जिससे पुरुषों का दबदबा कम हो सके।

अपनी कहानी गढ़ती सोसन कुजूर

अमित कुजूर

आदिवासी बाहुल्य जिला गुमला के रायडीह प्रखंड में कुल 61 गांव हैं। हम जिस गांव की बात कर रहे हैं, वह है कट्काया। यह गांव शंख नदी के किनारे बसा है। नदी के उस पार छत्तीसगढ़ राज्य की सीमा है। कट्काया गांव में आदिवासी समुदाय के लगभग 200 से 250 परिवार रहते हैं और प्रायः सभी परिवार खेती करते हैं।

आदिवासी बाहुल्य जिला गुमला के रायडीह प्रखंड में कुल 61 गांव हैं। हम जिस गांव की बात कर रहे हैं, वह है कट्काया। यह गांव शंख नदी के किनारे बसा है। नदी के उस पार छत्तीसगढ़ राज्य की सीमा है। कट्काया गांव में आदिवासी समुदाय के लगभग 200 से 250 परिवार रहते हैं और प्रायः सभी परिवार खेती करते हैं। इन्हीं परिवारों में से एक परिवार सोसन कुजूर का है। सोसन एक महिला किसान हैं। इनके तीन बच्चे हैं। पहल परियोजना द्वारा कट्काया गांव को चिन्हित किया गया है तथा सोसन कुजूर को लाभार्थी के रूप में ग्राम विकास समिति द्वारा चुना गया है। उन्हें किसान खेत पाठशाला में प्रशिक्षित कर उन्नत जैविक खेती करने के तौर-तरीकों से अवगत कराया गया है।

प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद सोसन कुजूर को डेमो प्लाट को तैयार करने के लिए तीन से चार तरह के बीज एवं थोड़ी सी जैविक खाद दिया गया। सोसन ने अपने डेमो प्लाट पर चार तरह के बीज डाले और कुआं से पटवन किया। कुछ दिन बीत जाने के बाद डेमो प्लाट पर सब्जियां तैयार हो गईं, जिनमे झींगा, गोंगरा, कद्दू, बोदी जैसी फसलें उग आईं। उत्पादित सब्जियों को स्थानीय माझाटोली एवं रायडीह बाज़ार में बेचा गया जिससे 1,500 से 2000 रूपयों की आमदनी हुई। सोसन कुजूर बताती हैं कि "मैं पहले अपनी खेत में एक ही सब्जी लगाती थी और आमदनी भी सौ-डेढ़ सौ रूपये होती थी, परंतु पहल परियोजना के साथियों से जुड़ने पर मालूम हुआ कि एक खेत में विभिन्न प्रकार की सब्जियों की खेती कर अपनी आय को बढ़ा सकते हैं, साथ ही अपने खाने की थाली में विविध तरह के भोजन के जरिए जरूरी पोषक तत्व शामिल कर सकते हैं। सोसन कुजूर को खेती करते देख गांव की दूसरी महिलाएं भी सब्जी उत्पादन करने के लिए प्रेरित हो रही हैं।

सुरक्षित पानी से सुरक्षित जीवन

मेनका कुमारी

मरदा टोंगरीटोली एक सुंदर गांव है। जैव विविधता इस गांव की मुख्य पहचान है। मरदा नदी गांव के दक्षिण में बहती है। जहां बरसात के मौसम में नदी अपने उफान पर होती है और खेतों को सिंचित करती है वहीं गर्मियों के दौरान रेत सी चमकती है। गांव में करीब 40 आदिवासी कृषक परिवार रहते हैं। पूरा गांव एक सामुदायिक कुएं का दूषित पानी पीने को मजबूर था। गांव के बीच में एक कुआँ था जिससे सभी परिवार घरेलू उपयोग के लिए पानी निकालते थे, लेकिन कुएं पर मुंडेर न होने के कारण बारिश के दौरान गंदा पानी कुएं में प्रवेश कर जाता था जिससे पानी दूषित हो जाता था। दूषित पानी से बीमारी का प्रकोप भी फैला हुआ था। कोई घर ऐसा नहीं था जहाँ बीमारी ने पैर नहीं पसारे हों।

कुएं की मुंडेर की मरम्मत करने का खर्च ग्रामीणों के लिए संभव नहीं था, अल्प आय पर जीने वाले ग्रामीणजन सरकारी या किसी संस्था की तलाश में थे जिससे कुएं की मुंडेर बनाई जा सके और ग्रामीणों को स्वच्छ पानी पीने को मिले सके। इन स्थितियों में ग्रामीणों के लिए उम्मीद की किरण बनकर आई पहल परियोजना। परियोजना के तहत गांव में ग्राम विकास समिति का गठन हुआ जो हर महीने एक निश्चित तारीख को बैठकर गांव की समस्याओं की शिनाख्त करती है और समस्या के समाधान हेतु कार्ययोजना बनाती है। मासिक बैठक में हितग्राहियों का चयन भी किया जाता है। ऐसी ही एक बैठक में ग्रामीणों ने पीने के पानी और कुएं के मरम्मत की बात की। ग्राम विकास समिति ने इस पर चर्चा की और कुएं पर मुंडेर बनाने का निर्णय लिया। चर्चा में लागत खर्च पर भी बात की गई। इस तरह इस कुएं के मुंडेर का निर्माण हुआ। सीमेंट, रेत, ईट और राजमिस्त्री की मजदूरी, आदि पर संस्था को 13500 रुपये की सहयोग राशि खर्च करनी पड़ी। इस कार्य में ग्रामीणों ने भी श्रमदान किया।

आज सभी ग्रामवासियों को स्वच्छ पेयजल और घरेलू उपयोग के लिए पानी उपलब्ध है और कुएं के सामने एक सुंदर हरा-भरा पोषण उद्यान भी है। अब गांव के निवासी कहते हैं कि 'यह निश्चित रूप से विकास संवाद समिति द्वारा की गई एक बहुत अच्छी पहल है। यह परियोजना हम तक एक वरदान के रूप में पहुंची है। बीमारी से अब हमारा वास्ता नहीं है। पोषण बाड़ी हमारे लिए सब्जियों का बड़ा स्रोत है।' अब इस कुएं से लगभग आठ से दस परिवार स्वच्छ पानी पी रहे हैं और लगभग 3.6 एकड़ भूमि भी सिंचित हो रही है।

साथी हाथ बढ़ाना

संदीप केरकेट्टा

जरजट्टा गांव रायडीह प्रखंड मुख्यालय से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में कुल 10 टोले हैं। सभी टोले एक दूसरे से कम से कम तीन किलोमीटर की दूरी पर बसे हैं। इन्हीं टोलों में से खास जरजट्टा टोला में एक सामुदायिक कुआं का निर्माण सरकारी योजना के अंतर्गत लगभग 20 साल पहले किया गया था। कुआं बनाने के बाद कुआं के आसपास के परिवार लाभान्वित हुए, पर जैसे-जैसे दिन बीतते गए, कुआं जर्जर होने लगा। सामुदायिक कुआं होने के कारण ग्रामीणों ने ध्यान नहीं दिया और अपनी जिम्मेदारी से मुकरते रहे। धीरे-धीरे लोगों ने कुएं के पास जाना छोड़ दिया। एक समय ऐसा आया जब कुआं ध्वस्त हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि ग्रामवासियों को पीने के पानी के लिए अपने घरों से लगभग 200-400 मीटर की दूरी तय करनी पड़ी और इस कुएं के आसपास की जमीन की सिंचाई भी बंद हो गयी और वहां की जमीन केवल मानसून पर निर्भर रहने लगी।

जब पहल परियोजना की शुरुआत हुई और ग्राम विकास समिति बनी तब समिति के सदस्यों द्वारा नए ढंग से कुएं के पुनर्निर्माण का प्रस्ताव रखा गया। इस प्रस्ताव पर विचार-विमर्श किया गया और ग्रामवासियों द्वारा श्रमदान करने की बात रखी गयी। पहल परियोजना से सामग्री व आर्थिक सहायता देने पर सहमति बनी। कुएं का पुनर्निर्माण करने में 11 दिन लगे और 23000 रूपए खर्च हुए।

अब कुएं के पुनर्निर्माण से जरजट्टा के 22 परिवारों को पीने के लिए स्वच्छ पानी घर के नजदीक ही उपलब्ध हो गया है, साथ ही स्थानीय किसानों की लगभग 2 एकड़ जमीन को सिंचाई के लिए पानी की सुविधा भी मिल गई है। किसान कुएं के पास की जमीन पर खेती करने लगे हैं और मानसून के साथ-साथ अन्य मौसम में भी खेती कर कुल जमा तीन फसल उगा रहे हैं। इस कुएं के पुनर्निर्माण से सभी ग्रामवासी काफी खुश हैं। हितग्राही मुकुट एक्का बताते हैं कि उनकी 50 डिसमिल भूमि की सिंचाई इस कुएं से हो रही है। वे कहते है 'मैं अब इस जमीन से तीन मौसम की सब्जियां उगा रहा हूँ जिससे मेरी आय में इजाफ़ा हुआ है। भविष्य में कभी भी अगर इस कुएं की मरम्मत की जरुरत पड़ेगी, तब हम सभी मिलकर सारा खर्च उठाएंगे।'

साझा पहल से जल संकट का समाधान

वर्षा रानी बखला

बढ़ती आबादी के साथ और जलसंरक्षण नहीं करने से जल संकट बहुत बढ़ गया है। जल संकट के कारण रबी फसल और सब्जियों की खेती नहीं हो पाती है।

हरे-भरे वनों से घिरा लुंगा गुमला जिले के रायडीह प्रखंड का एक सुन्दर गांव है जहां प्रकृति का अनूठा सौंदर्य देखने को मिलता है। इसी गांव में एक परिवार है सुनीता टोप्पो का। उनके परिवार में छह सदस्य हैं। इनकी आजीविका का मुख्य आधार खेती है और सिर्फ मानसून आधारित खरीफ़ फसल उगाई जाती है। जैसा कि इन दिनों खेती में होने लगा है, देश के अधिकांश हिस्सों में खेती पूर्ण रूप से मानसून पर ही निर्भर होकर रह गई है। बढ़ती आबादी के साथ और जलसंरक्षण नहीं करने से जल संकट बहुत बढ़ गया है। जल संकट के कारण रबी फसल और सब्जियों की खेती नहीं हो पाती है।

इस गांव में वर्ष 2021 से पहल परियोजना संचालित है जिसमें ग्राम विकास समिति का गठन किया गया है। हर माह होने वाली बैठकों में से एक बैठक में गांव के गंभीर जल संकट पर चर्चा की गई और सर्वसहमति से यह निर्णय लिया गया कि 20 वर्ष पूर्व बने एक कुएं, जो क्षतिग्रस्त हो गया है और जिसका स्वामित्व सुनीता टोप्पो का है, के पुनर्निर्माण से चार से पांच किसानों की लगभग 2 एकड़ भूमि पर खेती करने के साथ-साथ लगभग 15-20 परिवारों को पीने के लिए शुद्ध पानी की सुविधा उपलब्ध हो जाएगी। बैठक में यह सहमति बनी कि पहल परियोजना के द्वारा कुआं निर्माण में लगने वाली सामग्री का खर्च उठाया जाए और गांव के लोग श्रमदान करें। इस तरह कुएं का पुनर्निर्माण कार्य शुरू किया गया जिसमें लगभग 22,000 रूपये खर्च हुए।

कुएं के पुनर्निर्माण से 15-20 परिवारों को शुद्ध पेयजल मुहैया हुआ तथा सुनीता टोप्पो एवं अन्य किसानों को खेती करने की सुविधा मिली। घर के दैनिक उपयोग हेतु सब्जियां उगाई गईं और इससे सब्जी खरीदने में जो राशि खर्च होती थी, उसकी बचत हुई। शुद्ध एवं ताजी सब्जियां खाने से परिवार के बच्चों और विशेषकर गर्भवती महिलाओं को पोषण मिला।

पुष्पा टोप्पो सुरसंग पंचायत के बिरकेरा गांव की रहने वाली हैं। वह बांए हाथ से विकलांग हैं और अपने काम अक्सर नहीं कर पाती हैं। उनकी आर्थिक स्थिति भी खराब है और बाजार में रोजगार के अवसरों की कमी के कारण उनके पास नियमित आय का कोई स्त्रोत नहीं है। इसके कारण वह अपने बच्चों की पोषण संबंधी जरूरतों का ठीक से ध्यान नहीं रख पाती थी। उनके 4 बच्चे हैं और उनके पति दूसरों के खेतों में मजदूरी करते हैं।

मुर्गीपालन से आत्मनिर्भर बनीं पुष्पा टोप्पो

द्रोपदी कुमारी

पुष्पा अपने बाएं हाथ से विकलांग होने के कारण खेतों में ज्यादा काम करने में असमर्थ थीं, फिर भी परिवार के सहयोग से कुछ माह तक खाने के लिए कुछ उपजा ही लेती थीं। वह पहल परियोजना के ग्राम विकास समिति की सक्रिय सदस्य हैं और बैठकों में नियमित रूप से भाग लेती हैं। इसके अलावा जब भी वह परियोजना की किसी भी बैठक या कार्यक्रम में भाग लेती हैं, तो वह अपनी बस्ती के तीन-चार लोगों को अपने साथ लेकर आती हैं। उनकी यह पहल समुदाय के अन्य लोगों को भी परियोजना का हिस्सा बनाती है।

पहल परियोजना की एक बैठक में मुर्गीपालन के लिए लाभार्थियों का चयन करना था और बिरकेरा गांव की ग्राम विकास समिति के सदस्यों की सिफारिश पर पुष्पा को मुर्गीपालन हेतु लाभार्थी बनाया गया ताकि वह अपनी शारीरिक अक्षमता के बावजूद अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सके। उन्हें मुर्गे की कड़कनाथ और सोनाली नस्लों के 20 चूजे दिए गए। पुष्पा के लिए यह नया काम था, पर उसने सीखा और फिर जी-जान से जुट गई ताकि इस योजना का फायदा लेकर वह अपनी आय बढ़ा सकें, और गांव में नया कुछ कर दिखाएं। पुष्पा ने चूजों की बहुत मेहनत से देखभाल की।

मुर्गे-मुर्गियों में बीमारियों का प्रकोप एक समय कुछ यों फैला कि गांव में बर्ड फ्लू के समय पुष्पा के 20 में से 5 चूजे ही बच पाए। कमोबेश यही हाल सबका था, लोग हैरान थे, पर कुछ कर नहीं सकते थे। मगर पुष्पा ने हिम्मत नहीं हारी और अपने पांच चूजों के साथ काम को आगे बढ़ाया। चूजों के बढ़ने पर पुष्पा ने 4 मुर्गियों को स्थानीय बाजार में बेचकर 2,000 रूपये अर्जित किए। इसके साथ ही बाकी बची मुर्गी ने अंडे देने शुरू कर दिए थे। पुष्पा ने अंडे को अपने खान-पान की थाली का हिस्सा बनाया। जिससे बच्चों एवं घर के अन्य सदस्यों के थाली में प्रोटीन शामिल हुआ।

पुष्पा अब अंडे के साथ-साथ चूजे भी बेच रही हैं और बाकी ग्रामीणों के लिए प्रेरणा भी बन रही हैं। वह बताती हैं कि "मुर्गी पालन से मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति में थोड़ा बहुत सुधार हुआ है। मैं इसे बड़े स्तर पर करुँगी। इस कार्य में मेरे पति व परिवार के अन्य सदस्यों का पूरा सहयोग रहता है। अभी मैं लगभग 1,000 से 1,500 रुपये मासिक रूप से कमा लेती हूँ और मुझे लगता है मानो मेरा बायां हाथ फिर से काम करने लगा है। मुझे पहल परियोजना से हिम्मत और प्रोत्साहन-दोनो ही चीजें मिली हैं और आज मैं अपने परिवार की देखभाल कर रही हूँ और गांव में दूसरों की मदद कर रही हूँ।'

किसान खेत पाठशाला बनी जीवनशाला

7 सदस्यों वाले परिवार में रहती हैं रेशमा टोप्पो। वह एक सहज महिला हैं, जो परिश्रमी भी हैं और बहुत कुछ करना चाहती हैं।

वर्षा रानी बखला

झारखंड पहाड़ों और जंगलों से घिरा खूबसूरत राज्य है। घने जंगल, शानदार आदिवासी संस्कृति और काम के प्रति वहां के लोगों के अगाध लगन और नया सीखने की प्रवृत्ति इस राज्य को आदर्श राज्य बनाते हैं। अधिकांश गांव दूर-दराज के जंगलों में बसे हुए हैं जहां पहुंचना आज भी मुश्किल है, पर नवाचार और विकास के कर्मयोद्धा वहां पहुँच ही जाते हैं। यहां बात हो रही है उस गांव की जहाँ तक पहुंचने के लिए जंगलों के बीच होकर रास्ता तय करना पड़ता है। इस गांव का नाम है कापोडीह। इस गांव में 7 सदस्यों वाले एक परिवार में रहती हैं रेशमा टोप्पो। वह एक सहज और सरल महिला हैं, जो परिश्रमी भी हैं और बहुत कुछ करना चाहती हैं।

जब रेशमा को पहल परियोजना के तहत किसान खेत पाठशाला के बारे में पता चला, तब एक दिन वह ग्राम विकास समिति की बैठक में पहुंची और उन्होंने अपनी जमीन का एक हिस्सा डेमो प्लाट के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव रखा। रेशमा का मानना था कि जब तक कोई अपनी जमीन नहीं देगा, तब तक खेती में नए प्रयोग कैसे हो सकते हैं! ग्राम विकास समिति ने रेशमा के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। आज रेशमा इस प्लाट की देखरेख भी स्वयं करती है और उसमें खेती भी करती हैं।

किसान खेत पाठशाला में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद से रेशमा टोप्पो डेमो प्लाट पर की जाने वाली खेती में कंडा पानी और घनजीवामृत का उपयोग करती हैं। हाल ही में उनके खेत से जो सब्जियां उपजी हैं, घर में उपयोग के बाद बाकी बची सब्जियों को वह अपने गांव पतराटोली से 9 किलोमीटर दूर स्थानीय बाजार में बेच रही हैं। इससे लगभग 3000-3500 रुपयों की साप्ताहिक आमदनी प्राप्त हो रही है, साथ ही उत्पादन अधिक होने पर वे गुमला के साप्ताहिक सब्जी मंडी में भी बिक्री के लिए ले जाती हैं। इससे रेशमा की साप्ताहिक आमदनी 8000-10000 रूपए तक की हो जाती है। आज रेशमा के गांव के लोग उनसे इतने प्रभावित हैं कि वे रेशमा को 'गांव की रेशम' कहते हैं।

खेत प्रबंधन से बदलाव का सफर

संदीप केरकेट्टा

अरंडा गुमला जिले का एक सुदूरवर्ती पिछड़ा गांव है। इस गांव में रहती है विनम्र, मिलनसार और मेहनती कांति एक्का। वह अपनी परेशानियों का जीवटता से सामना कर परिवार का भरण-पोषण करती हैं। इनके परिवार में दो बच्चे और एक बूढ़ी सास हैं। अपनी परेशानियों के बारे में कांति बताती हैं कि गरीबी तो उनके परिवार में पूर्व से ही थी, लेकिन पति के लम्बे अरसे से बीमार होने के कारण और वर्ष 2018 में मृत्यु होने से अचानक समस्याओं और चिंताओं के अम्बार ने मानो उनके सर को जकड़ लिया। उनके पास जितनी भी जमा पूंजी थी, वह सारी की सारी पति के इलाज में खर्च हो चुकी थी। लगभग एक महीने तक आस-पड़ोस और रिश्तेदारों से सहयोग मिलने से थोड़ी राहत तो मिली, लेकिन वह राहत कब तक चलने वाली थी। वे बताती हैं कि उनके स्वर्गीय पति के हिस्से में कुल 10 एकड़ जमीन है, किन्तु आधे से ज्यादा जमीन खेती के लायक नहीं होने से लगभग 4-5 एकड़ पर ही खेती हो पाती है और वह भी सिर्फ खरीफ में धान की खेती। पति की मृत्यु के बाद खेती को उन्हें ही सम्हालना पड़ा क्योंकि कोई दूसरा उपाय नहीं था और बच्चों और सास को भी देखना था।

पहल परियोजना के तहत जब अरंडा गांव का चयन हुआ और ग्राम विकास समिति का गठन किया गया, तब इस समिति के माध्यम से समस्याओं से जूझते परिवारों को प्राथमिकता के आधार पर चयनित किया गया और उनमें से महिला किसान कांति एक्का का चयन हुआ। इसके बाद उन्हें किसान पाठशाला में कृषि पद्धति के सन्दर्भ में तकनीकी प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण प्राप्त कर कांति ने अपनी पुश्तैनी जमीन के 25 डिसमिल हिस्से मे खेती करना शुरु किया। आरम्भ में खेत की तैयारी, जैसे खेत में आड़-मेड़ बनाने, जुताई करने इत्यादि में थोड़ी परेशानी हुई, लेकिन ग्रामीणों ने इस कार्य में उनकी उदारतापूर्वक सहायता की।

कांति विगत दो वर्षों से निरंतर किसान पाठशाला के प्रशिक्षण सत्रों में शामिल होकर खेती के हुनर सीखती रहीं हैं। नतीजतन नए तरीकों को अपनाकर आज वह 60-70 डिसमिल में खेती कर रही हैं। वे कहती हैं कि जरुरतमंद किसान को इस प्रकार से संस्था द्वारा सहयोग करना उनके लिए बहुत ही लाभप्रद रहा है। उन्हें न केवल खाद एवं बीज का सहयोग मिला, बल्कि खेती के नए तरीकों, देशी खाद एवं कीटनाशक बनाने, पौधों में लगने वाले कीड़े और बीमारी की पहचान के बारे भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। कान्ति को जब बीज का सहयोग प्राप्त हुआ, तो दुकान से बीज खरीदने के खर्चे पर सीधा असर हुआ। इससे उन्हें 1000 रूपये की बचत हुई। प्राप्त बीजों की खेती और फसल की बिक्री से 3 सप्ताह के अन्दर लगभग 4,000 रुपये की आमदनी हुई।

विकास मित्र संदीप केरकेट्टा के अनुसार, जब वे उनके खेत

में दौरे के लिए गए तो उन्होंने देखा कि लगभग 60 – 70 डिसमिल जमीन पर अलग-अलग प्रकार के 8 से 10 प्रकार की सब्जियों के पौधे लगे हुए थे और वे काफी स्वस्थ और हरे-भरे दिखाई दे रहे थे।

नई तकनीकों और जानकारियों के माध्यम से कांति आज सकारात्मक सोच के साथ सभी परेशानियों का सामना करते हुए आगे बढ़ रही हैं और अपने बच्चों को गांव से दूर रांची के स्कूल में पढ़ाने का सपना साकार कर पा रही हैं। बीच-बीच में जब वे बच्चे से मिलने अपने रिश्तेदार के घर जाती हैं, तब वे अपने खेत की ताज़ी, हरी सब्जियों के साथ थोड़ा अनाज भी साथ ले जाया करती हैं, जिससे उनके रिश्तेदार काफी खुश रहते हैं। पति के गुजरने के बाद कांति के लिए इतना सबकुछ कर पाना संभव नहीं होता, अगर उन्हें पहल परियोजना का साथ न मिला होता।

पोषण बाड़ी के विविध प्रयोग

द्रोपदी कुमारी

पोषण बाड़ी बनाने के लिए मुझे 7-8 तरह के बीज के साथ-साथ पोषक तत्व वाले खाद दिए गए, लेकिन पोषण बाड़ी घर के निकट होने की वजह से मवेशियों के आक्रमण के डर से खेत की घेराबंदी के लिए जाल का सहयोग मिला

यह कहानी है गुमला जिला मुख्यालय से लगभग 32 किलोमीटर दूर स्थित बिरकेरा गांव की जहाँ अलविस केरकेट्टा अपनी जमीन के 40 डिसमिल हिस्से पर पोषण बाड़ी लगाकर नवाचार कर रहे हैं और उनके आस-पास के गांव के लोग उनके इस नवाचार को देखने और समझने के लिए हर चार-पांच दिन में आते रहते हैं। उनसे यह पूछने पर कि पोषण बाड़ी बनाने के पीछे क्या प्रेरणा रही, अलविस कहते हैं, 'मुझे' कभी भी किसी भी संगठन द्वारा तकनीकी रूप से ऐसी मदद नहीं मिली, जैसी पहल परियोजना से मिली। पोषण बाड़ी बनाने के लिए मुझे 7-8 तरह के बीज के साथ-साथ पोषक तत्व वाले खाद दिए गए, लेकिन पोषण बाड़ी घर के निकट होने की वजह से मवेशियों के आक्रमण के डर से खेत की घेराबंदी के लिए जाल का सहयोग मिला, परंतु सब ये पर्याप्त नहीं थे, तो मैंने खेत के आधे हिस्से में बांस और कपड़े का घेरा तैयार किया और साथ में अपने पास रखे कुछ बीज की भी रोपाई कर दी। इतने सहयोग मिलने से मेरे अन्दर उत्सुकता जगी और मैं इस तरह के काम के लिए तत्पर हुआ। मैंने जब एक पोषण बाड़ी बनाई, तो वह मुझे और मेरे बच्चों को मनभावन लगा। समय के साथ मैंने अपने खेत में इस तरह की पांच पोषण बाड़ियों का निर्माण कर लिया।' वे बताते हैं कि संस्था की कार्यकर्ता द्रौपदी ने समझाया कि किस तरह गोल पोषण बाड़ी बनाई जाती है और अलग-अलग तरह के बीज डाले जाते हैं। मुझे यह मॉडल बहुत पसंद आया क्योंकि मैंने पहले कभी भी ऐसी बाड़ी नहीं बनायी थी।

अलविस केरकेट्टा बिरकेरा गांव के एक बहुत मेहनती और स्वाभिमानी किसान हैं। अब उन्हें फसल उगाने में परेशानियाँ कम होने लगी हैं। क्योंकि अब उनके खेत के चारों ओर घेरा लगा हुआ है। पहले घेरा नहीं होने से काफी नुकसान उठाना पड़ता था और दोबारा मेहनत, खर्च और समय की बर्बादी होती थी, लेकिन अब अतिरिक्त मेहनत, खर्च और समय की बर्बादी से बचाव होता है। इसके परिणाम स्वरूप अलविस को अन्य काम, जैसे अन्य किसानों के खेत में मजदूरी और सब्जियों की बिक्री के लिए नियमित रूप से साप्ताहिक बाजार में उत्पादों को बेचने का समय मिल जाता है और कभी-कभी शहरों में जाकर मजदूरी का भी कार्य करने के लिए वे समय निकाल लेते हैं। इस तरह से उनकी आमदनी का स्रोत बढ़ रहा है। उनका कहना है कि अब वे अपने बच्चों को स्कूल भेज सकते हैं और उन्हें अपने परिश्रम और खेती की कमाई से शिक्षित कर सकते हैं। उनकी बेटी 12वीं कक्षा में है और उनका बेटा आईटीआई की पढ़ाई पूरी करने के बाद जमशेदपुर में टाटा स्टील में मशीन ऑपरेटर के रूप में काम कर रहा है। इस मेहनती किसान ने बिरकेरा और आस-पास के गांवों के कई ग्रामीणों को पोषण बाड़ी के मॉडल को अपनाने के लिए प्रेरित किया है। वे अपने खेत में बागवानी की अनूठी शैली को अपनाने के बाद से घर पर हर रोज दो अन्य किसानों को प्रेरित करते हैं। अलविस की पोषण बाड़ी से तीन महीने में लगभग 18000-20000 रुपए की आमदनी हो चुकी है।

आमदनी को और ज्यादा बढ़ाने की सोच के बारे में पूछे जाने पर अलविस कहते हैं कि अब तक खेत की जुताई बैल और हल के सहारे करते थे, लेकिन अब वे खेत की जुताई के लिए एक ट्रैक्टर खरीदने की सोच रहे हैं ताकि खेत की जुताई में ज्यादा समय न लगे और इस ट्रैक्टर को भाड़े में भी दिया जा सके। उनका यह भी कहना है कि किसान पाठशाला में सिखाए गए देशी खाद और कीटनाशक दवाओं का स्वयं निर्माण कर उपयोग करके खाद एवं दवा खरीद में भी रूपयों की बचत होती है और आमदनी भी होती।

केंचुआ खाद बना एक वरदान

प्रीति केरकेट्टा

गुमला जिला के रायडीह प्रखंड का पारासीमा गांव घने जंगल से घिरा हुआ है। वहां 65 आदिवासी परिवार रहते हैं। उन्हीं में से एक परिवार जगनू पाहन का है जो मुंडा जनजाति के हैं। वे परिवार में पत्नी और तीन बच्चों के साथ रहते हैं। उनकी पांच वर्ष की एक बेटी बचपन से ही बोल नहीं पाती है, जिससे परिवार दुखी रहता है और इलाज के लिए चिंतित रहता है। जगनू पाहन पेशे से किसान हैं। पति-पत्नी दोनों मिलकर खेती करते हैं।

जगनू पाहन बताते हैं कि वे पहले से खेती करते थे, लेकिन केवल रासायनिक खाद का प्रयोग करने से मिट्टी की उर्वरा शक्ति धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। उन्हें जितनी सब्जियों का उत्पादन करना था, उतना नहीं हो पाता था। वे बताते हैं कि 'जब से केंचुआ खाद का प्रयोग कर रहे हैं, उपज में अचानक बढ़ोतरी हुई है।' सब्जियों का उत्पादन पहले 30 डिसमिल में खेती करने पर भी 3-4 क्विंटल ही हो पाता था पर अब 5-8 क्विंटल तक हो रहा है। इस तरह जैविक खाद के प्रयोग से अधिक उपज होने के कारण आय में बढ़ोतरी हो रही है। मुनाफा देख उन्होंने केंचुआ खाद का अधिक मात्रा में प्रयोग करने का सोचा है। कुछ दिनों पहले उन्होंने दिए गये खाद में कुछ केंचुआ मिलाकर रख दिया। उन्होंने एक अन्य प्रयोग भी किया और एक बोरी में गोबर व मिट्टी डालकर उसमे केंचुआ छोड़ दिया और फिर बोरा को बांध कर पेड़ की छाँव में रख दिया। कुछ दिनों के बाद बोरा खोलकर देखा तो खाद तैयार होने लगा था। इस खाद का प्रयोग उन्होंने अपने खेतों में किया।

वे बताते हैं कि केंचुआ खाद का प्रयोग करने से उन्हें फसलों में परिवर्तन दिख रहा है। सब्जी में स्वाद भी आ गया है। वे बताते हैं कि पहले उन्हें हर उपज में लगभग 3-4 हज़ार रूपए की ही आमदनी होती थी, लेकिन अब हर तोड़ाई में लगभग 5 हज़ार रुपयों तक की आमदनी हो रही है जिसमे खाद की खरीदारी की बचत भी शामिल है। अब तक उन्होंने 4 तोड़ाई में 20 हज़ार रुपयों तक की कमाई की है। अभी उनके खेत में कद्दू, करेला, भिन्डी, बैंगन और मिर्च समेत कुल छह तरह की सब्जियां उग रही हैं। इस उपज को वे हर सप्ताह रायडीह के पतराटोली एवं बढ़गीडांड बाज़ार में बेचने ले जाते हैं। अद्भुत जीवट के धनी हैं जगनू पाहन!

जैविक खेती ही है भविष्य का सहारा

उषा लकड़ा

टोले में कुल 25 परिवार हैं। सभी परिवार भोगता जन-जाति के हैं। इन्हीं परिवारों में से एक है बालेश्वर प्रधान का जो खेती का काम कर अपनी जीविका चलाते हैं।

गुमला जिले के रायडीह प्रखंड के लौकी गांव के गोसिकोना टोला में बालेश्वर प्रधान का परिवार रहता है। यह टोला चारों ओर से घने जंगल व चट्टानों से घिरा हुआ है। टोले तक पंहुचने के लिए कच्चा रास्ता जाता है जो बेहद उबड़-खाबड़ और पथरीला है। काफी मेहनत और मशक्कत के बाद ही टोला तक पहुंचा जा सकता है। टोला वाले आधे रास्ते साईकिल और फिर बाद में अपने सर पर किसी भी सामान को ले जाने के लिए अभिशप्त हैं। इस टोले में कुल 25 परिवार हैं। सभी परिवार भोगता जन-जाति की श्रेणी में आते हैं। इन्हीं परिवारों में से एक है बालेश्वर प्रधान का जो खेती का काम कर अपनी जीविका चलाते हैं। गांव में आजीविका के मुख्य साधन बकरी-पालन, लाह-उत्पादन, वनोपज और खेती हैं। गांव के कुछ युवा राज्य से बाहर काम के लिए पलायन भी करते हैं।

बालेश्वर प्रधान खेती के लिए रासायनिक खाद, बीज व दवा का प्रयोग करते आ रहे थे और केवल खाद व दवा खरीदने के लिए उन्हें 25-30 किलोमीटर जाना पड़ता था। सीमित आय से केवल खाद पर 1500-2000 रूपए तक खर्च हो जाते थे। बढ़ती हुई महंगाई और खर्च की वजह से वे केवल साल में दो बार ही खेती कर पाते थे।

पहल परियोजना के तहत ग्राम विकास समिति की एक बैठक में पहली बार जब बालेश्वर प्रधान शामिल हुए, तब उन्होंने देशी खाद व दवा के प्रयोग पर हुई चर्चा में भाग लिया और ध्यानपूर्वक घनजीवामृत और कंडापानी बनाने की विधि सीखी तथा घर जाकर इस देशी खाद और दवाओं का प्रयोग अपनी बाड़ी में किया। बालेश्वर बताते हैं कि '1500-2000 रूपए जो पहले खर्च होते थे, अब केवल 100 रूपए मात्र के खर्च में 1 एकड़ के लिए खाद बनकर तैयार हो जाता है। इससे समय और पैसे दोनों की बचत हुई है।' बालेश्वर के इस प्रयोग के बाद गांव के पांच अन्य किसानों ने भी घनजीवामृत बनाया है और वे अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं।

परियोजना के तहत किया जा रहा यह प्रयोग लोगों के जीवन में बाजार के हस्तक्षेप को दूर कर रहा है और कम लागत में उन्नत खेती का मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

मुर्गीपालन और सेलेस्तिना की दुनिया

संदीप केरकेट्टा

15 एकड़ जमीन तो है, लेकिन 2-3 एकड़ जमीन ही खेती के लायक है। खेती भी सिर्फ वर्षा आधारित मौसम पर निर्भर है। चूँकि परिवार बड़ा है और बच्चे छोटे हैं, इसलिए खेतों में समय देना भी मुश्किल है।

सेलेस्तिना टोप्पो (पति स्वर्गीय अन्ध्रेयास टोप्पो) गुमला जिले के रायडीह प्रखंड के कूडो छतरपुर पंचायत के अंतर्गत अरंडा गांव के खक्सीटोली की निवासी हैं। यह गांव शंख नदी के किनारे बसा है। नदी किनारे बसे गांव में खेती के लिए कई अवसर हैं। पानी की उपलब्धता लगभग सुनिश्चित रहती है। मगर सेलेस्तिना जैसी विधवा के लिए 10 सदस्यों वाले बड़े परिवार को संभालना किसी बोझ से कम नहीं है। इनके हिस्से में कुल 15 एकड़ जमीन तो है, लेकिन 2- 3 एकड़ जमीन ही खेती के लायक है। खेती भी सिर्फ वर्षा आधारित मौसम पर निर्भर है। चूँकि परिवार बड़ा है और बच्चे छोटे हैं, इसलिए खेतों में समय देना भी मुश्किल है। जो भी उपजता है, वह साल भर चल नहीं पाता। परिवार को सरकार से मिलने वाले राशन पर निर्भर रहना पड़ता है।

पति की मृत्यु, बच्चों की पढ़ाई की चिंता, सास-ससुर की सेवा और घर चलाने की जिम्मेदारी के बोझ तले जीवन कितना मुश्किल होता है, यह सेलेस्तिना ही जानती हैं। वह बीमार भी पड़ जाती हैं। इन्हीं परिस्थितयों में सेलेस्तिना के 17 साल के बड़े बेटे ने काम की खोज में दूसरे राज्य में पलायन किया और चेन्नई पहुंच गया जहां उसे एक होटल में काम मिला।

जब अक्टूबर 2022 में पहल परियोजना की शुरूवात हुई और ग्राम विकास समिति बनाई गई, तब उन महिलाओं एवं पुरुषों की पहचान की गई जिन्हें काम से जोड़ा जा सके। एकल महिला, असहाय व्यक्ति, छोटे एवं मझोले किसानों को प्राथमिकता दी गई और उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रशिक्षण आरम्भ किए गए। इसी क्रम में मुर्गीपालन जैसी गतिविधि पर चर्चा की गई और सेलेस्तिना को मुर्गीपालन गतिविधि का लाभार्थी हेतु चयन किया गया। उन्हें संस्था की ओर से सोनाली नस्ल की 20 मुर्गी के चूजे दिए गए और चूजों को पालने के लिए पर्याप्त जानकारी भी दी गई।

इस सहयोग के बाद सेलेस्तिना मुर्गी की देखरेख में लग गयीं। इसके बावजूद जंगली बिल्ली के रात्रिकालीन आक्रमण के कारण 4 मुर्गियों की मौत हो गयी। लगभग तीन महीने के बाद बाकी मुर्गियां बड़ी हो गयीं और एक मुर्गी का वजन लगभग डेढ़ से दो किलो तक हो गया। सेलेस्तिना बताती हैं कि उन्होंने स्थानीय बाज़ार में दो मुर्गियों की बिक्री की, जिससे 1050 रूपए की कमाई हुई। यों देखा जाए तो 16 मुर्गियों की कीमत लगभग 8000 रूपए होगी, लेकिन सारी मुर्गियों के बेचने के विचार पर वे कहती हैं कि "सारी मुर्गियों को न बेचकर अंडे को ही बेचा जायेगा, जिससे आमदनी दिन-प्रतिदिन मिलती रहेगी और आय के स्रोत बने रहेंगे।"

वर्तमान में सेलेस्तिना ने अंडे बेचने शुरू कर दिए हैं। एक अंडे की कीमत स्थानीय बाज़ार में छह रूपये होती है। एक सप्ताह में सेलेस्तिना के पास लगभग दो दर्जन तक अंडे हो जाते हैं, जिससे प्रति सप्ताह लगभग 300-500 रूपए तक की कमाई हो जाती है। आगे की योजना के बारे में सेलेस्तिना बताती हैं कि वह स्थानीय बाज़ार में चूजों की भी बिक्री करेंगी।

अनन्या की कुपोषण से लड़ाई

उषा लकड़ा

अनन्या की माँ घर पर काम संभालती हैं और पिता मजदूरी करते हैं। उसके परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण पिता को रोजगार के लिए दूसरे राज्यों में जाना पड़ता है।

गुमला जिला अंतर्गत रायडीह प्रखंड के गांव जमगईं में रहने वाली अनन्या बड़ाईक डेढ़ साल की एक बच्ची है। वह अपने परिवार में माता-पिता, भाई और दादा-दादी के साथ रहती है। गांव में लगभग 130 घर हैं जिनमे रौतिया, बड़ाईक, खडिया, उरांव के साथ-साथ विशेष पिछड़ी आदिवासी समुदाय के कुल 794 लोग रहते हैं। अनन्या की माँ घर पर काम संभालती हैं और पिता मजदूरी करते हैं। उसके परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण पिता को रोजगार के लिए दूसरे राज्यों में जाना पड़ता है। वे साल के चार महीने मजदूरी के लिए घर से बाहर रहते हैं जहाँ पर वे हर महीने 6500 से 7000 रूपए कमा लेते हैं। इस कमाई के पैसे से खुद का खर्च उठाने के बाद घर के खर्च के लिए भी हर माह पैसे भेजते हैं।

अनन्या का जन्म सिमडेगा के सदर अस्पताल में सामान्य प्रसव से हुआ था। माँ के कमजोर होने के कारण बच्ची भी कमजोर पैदा हुई थी। जन्म से ही कमजोर होने के कारण उसके स्वास्थ्य में सुधार एवं वजन को बढ़ाने के लिए उसके माता-पिता ने उसका लगातार इलाज कराया, लेकिन अनन्या का वजन नहीं बढ़ा। वजन नहीं बढ़ने के कारण उसके माता-पिता ने परेशान होकर उसका इलाज बंद करा दिया।

पहल परियोजना के तहत इस गांव में स्वास्थ्य एवं पोषण से जुड़े मुद्दों पर सभी आंगनवाड़ी केन्द्रों की सहायिकायें साथ मिलकर काम करती हैं। आंगनवाड़ी से लाभान्वित सभी बच्चों की वृद्धि का आकलन निगरानी चार्ट के माध्यम से किया जाता है। इन सभी लाभान्वित बच्चों में अनन्या भी शामिल थी, परंतु अनन्या आंगनवाड़ी केंद्र के पौष्टिक आहार से वंचित रहती थी क्योंकि उसकी माँ पारिवारिक कामों में व्यस्त रहती थी और इस कारण माँ को आंगनवाड़ी ले जाने का मौका नहीं मिल पाता था।

एक बार आंगनवाड़ी केंद्र, जमगईं में 'ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण दिवस' के अवसर पर गांव के सभी बच्चों और माताओं को बुलाया गया। उस दिन आंगनवाड़ी सेविका द्वारा 0-5 वर्ष तक के बच्चों का वजन एवं ऊंचाई नापी गयी। उस दौरान पहल परियोजना के तहत गठित ग्राम विकास समिति के सदस्य भी केंद्र में बच्चों का वजन एवं ऊंचाई नापने में सहयोग कर रहे थे। उस दिन अनन्या को उसकी माँ के साथ बुलाया गया था। जब अनन्या का वजन और ऊंचाई मापा गया, तो पाया गया कि वह कुपोषित है। ग्राम विकास समिति के सदस्यों ने अनन्या की माँ को कुपोषण के बारे में विस्तार में बताया और समझाया कि अनन्या को तुरंत कुपोषण उपचार केंद्र में भर्ती करने की जरुरत है जिससे इसका इलाज हो सके और कुपोषण से बाहर किया जा सके। काफी समझाने के बाद अनन्या को कुपोषण उपचार केंद्र में भर्ती किया गया। 21 दिनों तक उपचार केंद्र में रहने के बाद अनन्या स्वस्थ होकर घर लौटी। अब अनन्या स्वस्थ है और अपने पैरों में खड़ी हो पा रही है। अनन्या की मां कहती हैं कि "अपने बच्चे को स्वस्थ देखकर बहुत अच्छा लगता है। पहले वह दूध नहीं पीती थी, केंद्र में दूध पीने की आदत लग गयी, तो अब यहां घर में भी पीने लगी।"

अनन्या एक नहीं है। पूरे क्षेत्र में सैकड़ों अनन्याएं हैं जो कुपोषण से जूझ रही हैं। परिवार आर्थिक रूप से सक्षम नहीं है, सेवाओं की पहुंच नहीं है, इलाज की सुविधा नहीं है। कुपोषण का दाग झारखंड के लिए एक बड़ी चुनौती है।

मेहनत के ईंधन से ही जीवन की गाड़ी चलती है

द्रोपदी कुमारी

जीवन स्थितियां कब बदल जायें, कोई नहीं जानता; मगर हमारे जीवन की दशा और दिशा काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि हम प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कैसे करते हैं? संघर्ष ही हमें जीने की ताकत देता है और इस बात को साबित करती है गुमला के गांव रेंगोला की निवासी सुषमा बड़ा की कहानी।

रेंगोला गांव के मंगराटोली में सुषमा बड़ा अपनी दो छोटी बच्चियों के साथ जीवन बीता रही हैं। वह स्वयं खेती करती हैं और पास के बरगीडाड बाज़ार में सब्जी बेचकर अपना घर चलाती हैं। एक हाथ से तराजू पर भरी सब्जियां तौलते और दूसरे हाथ में डेढ़ साल की अपनी बच्ची को पकडे बाज़ार में सुषमा बड़ा प्रायः दिख जाती हैं। उन्हें अपनी बच्ची के साथ काम करते देख कई लोग अचरज से रुक जाते हैं, पर उसके चेहरे की मुस्कान में कोई फर्क नहीं पड़ता। सुषमा कहती हैं कि अपना काम कर रही हूँ और मेहनत कर कमा रही हूँ, इसमें आश्चर्य कैसा! जीवन जीने की लालसा और मेहनत देखकर विकास संवाद की द्रौपदी ने उनके बारे में जानना चाहा, तो पता चला कि कुछ साल पहले परिस्थितियाँ ऐसी नहीं थीं।

सुषमा का मायका महुआडांड स्थित पहाड़टोली में है। 7 लोगों के आदिवासी परिवार की वह बड़ी बेटी थीं और अपने माता-पिता का हाथ खेती के कामो में बंटाया करती थीं। घर पर और चार बहनें थी, जिनकी शादी की जिम्मेदारी माता-पिता पर थी। ऐसे में स्कूल की पढ़ाई ख़त्म करते ही साल 2018 में रेंगोला गांव के संदीप टोप्पो से सुषमा की शादी तय कर दी गयी। संदीप टोप्पो के माता-पिता का देहांत हुए काफी साल हो गए थे और वे घर पर अकेले रहते थे। संदीप अपनी पहली पत्नी की आकस्मिक मृत्यु के बाद और अकेले हो गये थे, तो गांव वालों ने उनकी दूसरी शादी करने की सलाह दी और इस तरह उनका दूसरा विवाह सुषमा के साथ हुआ।

विवाह के बाद सुषमा और संदीप दो कमरे के छोटे से घर में ख़ुशी-ख़ुशी रहने लगे। मात्र डेढ़ एकड़ की ज़मीन पर दोनों पति-पत्नी साथ काम करते और बाज़ार जाकर सब्जियां बेचकर अपना जीवनयापन करते। साल के तीन माह शहर जाकर संदीप मिस्त्री का काम भी करते क्योंकि गांव में खेती से बारहों महीने कुछ निकाल पाना संभव नहीं था। 2019 में दम्पति का घर एक प्यारी सी बेटी की किलकारियों से गूँज उठा। दोनों खेती कर अपना गुजारा कर रहे थे, पर अब बेटी होने से आगे के भविष्य की चिंता भी सताने लगी। दोनों खुश थे, खूब मेहनत करते थे और अपनी बेटी को पर्याप्त समय देते थे, लेकिन जिंदगी एक बड़ा इम्तहान लेने वाली थी।

एक बड़े दुख का साया सुषमा के जीवन में फैल गया, जब उसे पता चला की 2021 के दिसम्बर महीने की एक शाम उसके पति संदीप टोप्पो की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। इसी दौरान वह गर्भवती भी थी। सुषमा के लिए मानो पहाड़ टूट पड़ा हो और उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह आगे कैसे जीवन जिएगी और बच्चों का ध्यान रखेगी? वह बुरी तरह से टूट सी गयी थीं। इतनी कम उम्र में दो बच्चों के साथ विधवा हो जाने का दुख केवल वह ही समझ सकता है जिसके साथ यह घटना हुई हो। जब कभी गांव वाले आते, तो कभी बात-बात में खरी-खोटी भी सुना जाते। उनके ताने और पीठ पीछे की बातों को सुनकर उसे अक्सर अपराधबोध होता, पर वह सामान्य रहने की कोशिश करती। अभी दुर्घटना हुए दो महीने नहीं हुए होंगे, जब सुषमा ने अपनी दूसरी बेटी एलीना को जन्म दिया। वह एक ऐसी बच्ची थी जिसके चेहरे की चमक को देख सुषमा को जीवन जीने की फिर से लालसा जगी। उसने ठान ली

कि अपनी दोनों बच्चियों के पालन-पोषण में पिता की कमी महसूस होने नहीं देगी।

सुषमा नजदीक के बरगीडाड और माझाटोली बाज़ार में हर महीने दो बार सब्जी बेचने जाती हैं, जिससे घर चलाने के लिए 1500-2000 रुपयों तक की कमाई हो जाती है। वे आंगनवाड़ी सेविका की मदद से माता और बच्चे को मिलने वाले लाभ भी उठा रही हैं। साथ ही साथ वे विधवा पेंशन की हक़दार भी हैं। उनकी मेहनत देखकर उन्हें परियोजना की ओर से मुर्गीपालन और पोषणबाड़ी लाभार्थी भी चुना गया। वह ग्राम विकास समिति की सबसे सक्रिय सदस्य भी हैं। सुषमा कहती हैं कि 'जीवन की रेलगाड़ी चलानी है तो मेहनत का ईंधन लगाना ही पड़ता है।' आज वह अपनी बिटिया को गोद में लेकर खेती-बाड़ी करती हैं। निःसंदेह सुषमा की कहानी किसी प्रेरणा से कम नहीं है।

पहल परियोजना से गरीब, वंचित और खासकर विधवा महिलाओं को जो संबल मिला है, वह अतुलनीय है और इससे यह भी सीख मिली है कि जब महिलाओं को प्रेरित करके उनके आत्मविश्वास को बढ़ाकर कौशल और दक्षताएं सिखाई जाती हैं, तो वे समाज में बहुत तेजी और मजबूती से उभरकर आती हैं और सबके लिए अलख जगाने की मिसाल बनती हैं। सुषमा कहती हैं कि "जीवन के सबसे मुश्किल दौर में जब मैं हर तरफ से निराश हो गई थी तो मुझे पहल परियोजना ने मजबूत सहारा दिया और अपनी लगन और मेहनत से मैंने जीवन की डोर को फिर से थाम लिया।'

पोषण बाड़ी बनी स्वस्थ जीवन का आधार

राजेश भदौरिया

गुमला जिले में पालकोट प्रखंड के बागेसरा गाँव में रहने वाली प्रभादेवी बताती हैं कि, एक छोटी सी पोषण वाटिका ने हमारा जीवन बदल दिया है। पहले मैं बहुत बीमार रहती थी, डॉक्टर और दवाइयों पर बहुत पैसा खर्च होता था। लेकिन जब से हमने अपने घर की पोषण बाड़ी में उगाई हुई सब्जियों और फलों को खाना शुरू किया है, तब से हमारा बीमार होना कम हो गया है। इलाज और दवाइयों पर खर्च भी अब न के बराबर होता है।

प्रभादेवी के परिवार में कुल 7 सदस्य हैं। पति सुकर लोहरा खेती और मजदूरी का काम करते हैं। 3 लड़के और 2 लड़कियां हैं। उनके सभी बच्चे नियमित स्कूल जाते हैं। उनके पास 1.25 एकड़ खेती हैं। पशुधन में 1 गाय और 2 बकरियां हैं। इन सभी की देखभाल प्रभादेवी खुद करती हैं।

अपने घर के काम की देखभाल के साथ साथ प्रभादेवी अपने गाँव के विकास कार्यों में भी सक्रियता से सहयोग करती हैं। पहल परियोजना के अंतर्गत गठित ग्राम विकास समिति में वह कोषाध्यक्ष हैं और अपनी सभी भूमिकाओं का निर्वाह बहुत अच्छे से कर रही हैं।

प्रभादेवी बताती हैं कि वर्ष 2021 से उनके गाँव में विकास संवाद द्वारा एचडीएफसी बैंक परिवर्तन के सहयोग से पहल परियोजना का संचालन किया जा रहा है तभी से वह पहल परियोजना से जुड़ी हुई हैं। पहल परियोजना से जुड़कर उन्हें बहुत फायदा हुआ है। उन्होंने अपने खेत में रासायनिक खाद और कीटनाशकों का उपयोग करना बिलकुल बंद कर दिया है। और खाद और उर्वरक के रूप से पहल परियोजना के अंतर्गत सीखी हुई पद्धतियों से केंचुआ खाद, उर्वरक के रूप में घन जीवामृत और कीटनाशक के लिए नीमास्त्र तैयार करती हैं और समय समय पर अपने खेत और पोषण बाड़ी में उपयोग करती हैं।

वह कहती हैं कि, इन सब तरीकों को अपनाने से हमारी खेती की लागत हुई है। जहर मुक्त भोजन का उत्पादन भी बढ़ा है। हमारी पोषण बाड़ी में बारहों महीने चौदह से पंद्रह तरह की सब्जियां उगती हैं। अभी इसमें बैगन, टमाटर, कद्दू, कोहड़ा, तोरई, लोटनी साग, पालक, लाल भाजी, हरी भाजी, गाजर, मूली, धनिया, मिर्च और मुनगा, पपीता के पेड़ भी लगे हुए हैं। अपनी पोषण बाड़ी की सब्जी का स्वाद बाज़ार की सब्जी से ज्यादा अच्छा लगता है, बच्चे भी सब्जी खाना पसंद करते हैं।

यह बहुत अच्छा काम है, इससे अपने घर में ही हमेशा ताजी सब्जियां मिल जाती हैं। बाज़ार से सब्जी नहीं खरीदनी पड़ती है। पैसे की बचत भी होती है और सेहत भी अच्छी रहती है। मैं लोगों से कहती हूं कि सभी अपने घरों में पोषण बाड़ी लगाओ और स्वस्थ और ताजी सब्जी रोज खाओ।

पोषण सुरक्षा के लिए
हमारी
पोषण वाटिका
(एक मार्गदर्शिका)
PARIVARTAN

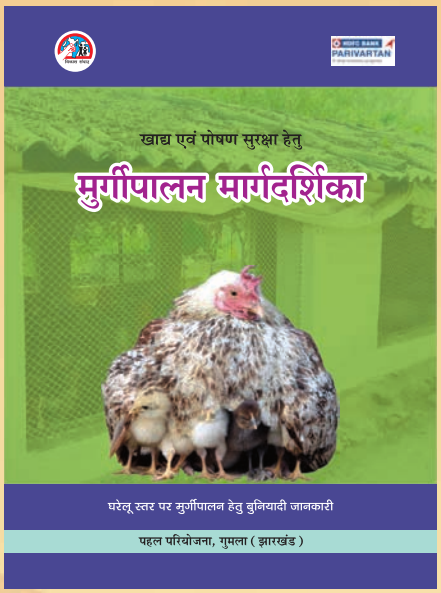
PARIVARTAN
खाद्य एवं पोषण सुरक्षा हेतु
मुर्गीपालन मार्गदर्शिका
घरेलू स्तर पर मुर्गीपालन हेतु बुनियादी जानकारी
पहल परियोजना, गुमला (झारखंड)

किसान मार्गदर्शिका
खाद्य एवं पोषण सुरक्षा के लिए
देशी एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन पर आधारित
टिकाऊ खेती
PARIVARTAN

PARIVARTAN
पहल समाचार
जुलाई-सितंबर 2023
वर्ष - 1, अंक - 1
अपनी बात
सभी किसान भाइयों और बहनों को जोहार! पहल समाचार का पहला अंक आपके सामने है। आप लोगों के द्वारा अपने गांव में खेती-बाड़ी के जो अच्छे काम किए जा रहे हैं। उन कार्यों को, आपके द्वारा खेती में किए गए बदलाव की कहानियों और आपके अनुभवों को आपकी भाषा में, आपके शब्दों में लिखने के लिए हमने इस पहल समाचार को शुरुआत की है। इसके माध्यम से अन्य किसान भाई-बहन भी आपके द्वारा खेती-बाड़ी में किए गए कार्यों के बारे में जान सकेंगे। आपकी सफलता की कहानियों को पढ़कर ये भी अपनी खेती बाड़ी को बेहतर बनाएंगे। और अपने घर में भोजन की थाली को आपकी थाली की तरह विविधतापूर्ण बनाकर स्वस्थ और सुपोषित जीवन स्तर को अपनाएंगे।
स्वस्थ और सुपोषित जीवन का आधार विविधता पूर्ण भोजन है। भोजन से संबंधित अधिकांश चीजें हम खेती करके उगाते हैं। जब सही तरह से भोजन बनाकर खेती की जाती है, तो परिवार के भोजन में पोषण से संबंधित सभी चीजें जैसे अनाज, दालें, तिलहन, मसाले, फल, सब्जी, दूध, अंडा, मांस-मछली आदि हमें अपने खेत से ही प्राप्त हो जाती हैं।
इसीलिए, पहल परियोजना के अंतर्गत टिकाऊ समेकित खेती को बढ़ावा देने के प्रयास किए गए हैं। और गुमला जिले के 26 गावों में कुल 5246 किसान ने समेकित खेती की पद्धतियों को अपनाकर इसी विधि से खेती कर रहे हैं। टिकाऊ समेकित खेती करने के कई फायदे हैं। इनके बारे में सोच-विचार करने की और पूरी तरह से अपनाने की जरूरत है। इसका पहला फायदा तो यह है कि, किसान अपने खेत में कई तरह की फसलें जैसे अनाज, दालें, तिलहन, मसाले, फल, सब्जी आदि उगाते हैं, और जब ये चीजें घर में ही होती हैं तो पहले परिवार के खाने के काम आती हैं। परिवार का भोजन पौष्टिक होता है तो इससे कई तरह की बीमारियों और कुपोषण से बचाव होता है। दूसरा फायदा बहु-फसल लगाने पर यदि कोई एक या दो फसल खराब भी हो जाती हैं तो अन्य फसलों से उस नुकसान की पूर्ति हो जाती है और किसान कर्जदार होने से बच जाता है। तीसरा फायदा है, अपने परिवार की जरूरत का भोजन पूरा हो जाने के बाद बाकी का बाजार में बेच कर आमदनी भी हो जाती है। चौथा फायदा है, बाजार से महंगी खाद सामग्री नहीं खरीदनी पड़ती है। पांचवा फायदा है कि, किसान का सबसे ज्यादा खर्चा बीज और खाद खरीदने में होता है जबकि इस पद्धति में किसान अपने घर के पशुओं द्वारा उत्पादित पदार्थ एवं खेत में प्राप्त अन्य व्यर्थ सामग्री के द्वारा खाद और दवाई बनाकर फसलों में उपयोग करते हैं। इस तरह से फसल और भूमि को पोषण देने के साथ-साथ देसी बीजों को उगाकर जैव विविधता को भी संरक्षित करते हैं।
समेकित खेती की इन प्रक्रियाओं को अपनाकर आपको क्या सीख मिली? क्या फायदा हुआ? क्या चुनौतियां आई और उनको कैसे हल किया? क्या आप इस पद्धति को आगे भी जारी रखेंगे? अपने अनुभवों को लिखने के लिए आज ही कागज-कलम उठाइए, और लिख भेजिए अपने सुपोषण की कहानी।
यह अंक आपको कैसा लगा? कितना उपयोगी है? इसे और बेहतर कैसे बना सकते हैं? इसके अलावा खेती-बाड़ी से संबंधित कोई प्रश्न या शंका हो तो जरूर लिखिए और भेज दीजिए समाचार पत्र में पीछे दिए गए पते पर। हम आपके प्रश्नों का जवाब देने का पूरा प्रयास करेंगे और आपके लेख, सवाल, आपके सुझावों में से कुछ को अगले अंक में शामिल करेंगे।
संपादक मंडल की ओर से
1

विकास संवाद

HDFC BANK PARIVARTAN
A step towards progress

पहल परियोजना

(समग्र कृषि व्यवस्था और आजीविका के लिए सहभागी पहल)

वंचित समुदाय की पोषण एवं खाद्य सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने के उद्देश्य से पहल परियोजना का संचालन रायडीह एवं पालकोट प्रखंड जिला गुमला (झारखंड) में किया जा रहा है। यह परियोजना विकास संवाद समिति द्वारा एच.डी.एफ.सी. बैंक परिवर्तन के सहयोग से संचालित की जा रही है।

इस परियोजना का मकसद छोटे, मझोले और महिला किसानों का मनोबल बढ़ाना और उनकी कृषि-आजीविका संबंधी क्षमता वृद्धि करना है। इसके अंतर्गत टिकाऊ कृषि व्यवस्था की प्रक्रियाओं को बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि खेती लाभ का व्यवसाय बने और इसके माध्यम से परिवारों की आय में वृद्धि होने के साथ-साथ उनकी पोषण और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

परियोजना के अंतर्गत समुदाय द्वारा स्थानीय स्तर पर प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन, भूमि सुधार और जल संरक्षण के कार्य, खेती के उन्नत तरीकों के साथ-साथ पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण और संवर्धन किया जा रहा है ताकि कृषि, मौसम के उतार-चढ़ाव का सामना कर सकें।

परियोजना के माध्यम से वंचित परिवारों की आजीविका के साधनों में विविधता एवं खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु टिकाऊ समेकित कृषि पद्धति को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके अंतर्गत समुदाय केन्द्रित और प्रक्रिया आधारित फसल विविधता, पोषण वाटिका, पशुपालन, मुर्गी पालन, मछली पालन जैसी गतिविधियां समुदाय द्वारा अपनाई जा रही हैं।